निवेदन

बाबू सूरजभान जी वकील समाज के विचारशील ु

में से हैं। धर्मग्रंथों का आपका अध्ययन, मनन और [illegible]

विस्तृत है। उधर समाज के प्रति आपकी सेवाएं भी

कीमती है। आपकी लेखनी का यह 'ज्ञान सूर्योदय' पाठकों

सामने रखते हमें प्रसन्नता है। उर्दू में यह ~

चुका है, हिन्दी में इसकी आवश्यकता थी। हर्ष है कि

उस आवश्यकता की पूर्ति का अवसर 'मंडल' को मिला है।

पाठकों से आशा है वह ज्ञानसूर्योदय को ध्यान

पढ़ेंगे और उससे समुचित लाभ उठायेंगे।

निवेदक

मन्त्री

वक्तव्य

तीस पेंतीस वरस हुवे जब मैंने ज्ञान सूर्योदय का प्रथम भाग लिख कर पवलिक में पेश किया था। उसमें हेतुवाद से यह सिद्ध किया गया था कि कोई ईश्वर सृष्टिका पैदा करने वाला वा प्रवन्ध करने वाला नहीं है, सब काम वस्तु स्वभाव से ही हो रहा है। वह पुस्तक यद्यपि किसी धर्म विशेष के आधार पर नहीं लिखी गई थी। जो कुछ हेतुवाद से सिद्ध होता है उसही को बताने की कोशिश की गई थी, तो भी जैनियों ने उसकी क़द्र आशा से ज्यादा की, मैंने तो उसको उर्दू में ही लिखा था, और उर्दू में ही छपाया था परन्तु जैनियों की क़द्रदानी से उसका मरहटी अनुवाद भी छपा और हिन्दी में तो वह वार वार ही छपती रही, जैनियों के सिवाय अन्य लोगों ने उसको घृणाकी दृष्टिसे देखा, किसी २ ने बुरा भला लिखकर अपने दिलका गुवार भी निकाला, पर हेतुवादसे उसका खडन कर दिखाने की कोशिश किसी ने भी न की, उस ही पुस्तक में मैंने वायदा किया था कि दूसरे भाग में कर्म औरउनकाफल किस तरह मिलता है इसवात को हेतुवाद से सिद्ध करके दिखाया जावेगा, परन्तु शोक है कि उस वायदे को मैं वहुत ही देर से पूरा कर रहा हू, इस दूसरे भाग मे भी मैंने किसी एक धर्म का आधार न लेकर हेतुवाद से ही काम लिया है, यद्यपि भूमिका के आदि मे मैंने कर्मसिद्धान्त के विषय में अन्य धर्मोंकी अपेक्षा जैनधर्म की तारीफ की है, परन्तु इस धर्मके आधारपर ही यह पुस्तक नहीं लिखी गई है, जो कुछ हेतुवाद से सिद्ध हुवा उस ही को प्रगट करने की कोशिश की गई है, आशा है कि सचाई के खोजी इस को ध्यान देकर पढ़ेंगे।

कर्म फल मिलने का वहुत ही मोटा सा ढांचा इस पुस्तक में वर्णन किया गया है, यदि यह ही प्रारम्भिक वातें समझ में आ-जावें तो फिर सव कुछ आपसे आपही समझ में आने लगता है, इसकी वारीकियां, पापपुन्य वाभलेवुरेकर्मोंका लक्षण उन के पैदा होने के कारण, उनकी रोकथामकेउपाय, कर्म सर्वथा दूर हो सक्ते है वा नही इसका निर्णय और दूर हो सकते है, तो किस तरह यह सव विषय ऐसे हैं जो इस एक ही पुस्तक में नहीं लिखे जा सकते है, यदि तीसरे भाग के लिखने का अवसर मिला तो उसमें ज़रूर वर्णन किये जावे गे, परंतु वुढ़ापे ने आघेरा है इस कारण किसी प्रकार का वायदा करने का हौसला नही होता है, पढ़ने वालों की रुचि यदि ज़ोर करेगी तो सम्भव है कि तीसरा भाग भी लिखा जावे और यह सव विषय स्पष्ट होजावे ।

यह दूसरा भागभी उर्दू में ही लिखा गया था और जुलाई सन १९२५ में जैन मित्र मंडल देहली की तरफ से प्रकाशित हुवा, अव अपने परोपकारी भाई लाला पन्नालाल मंत्री जैन मित्रमंडल देहली की आज्ञा से इसको हिन्दी में भी लिख दिया है, लिखते हुवे शायद कहीं कहीं उर्दू से कुछ कमती वढ़ती भी हो गया है,अक्षर २ उसका उल्था करने का ख्याल नही रक्खा गया है

सूरजभानु वकील नकुड़ (सहारनपुर)

* ज्ञान सूर्योदय दूसरा भाग *

कर्म और उसके फल

भूमिका.

जीव को उसके बुरे भले कर्मों का फल ज़रूर मिलता है. इस बात का जितना भी दृढ़ श्रद्धान मनुष्य को होगा उतना ही वह बुरे कृत्यों से बचेगा, और नेक कामों की तरफ़ लगेगा, इस ही कारण दुनियां में जितने भी मत हैं वह सब कर्मों को और उनके खोटे खरे फल को थोड़ा बहुत ज़रूर मानते हैं, किन्तु इस विषय में जो सीधा स्पष्ट और वस्तु स्वभावके अनुसार सिद्धान्त जैनधर्म का है वहदूसरे किसीभी धर्म का नहीं है, मुसलमान और ईसाई तो मनुष्य के सिवाय अन्य किसी पशु पक्षी वा कीड़े मकौड़े आदि प्राणियों में जीव ही नही मानते है,इसही कारण उनके मतके अनुसार तो यह पशु पक्षी आदि प्राणी न तो कोई किसी प्रकार का कर्म ही करतेहैं और न किसी कर्म का फल ही भोगेंगे,उनका तो न तो पहले कोई जन्म था और न आगे को होगा, वह तो संसार की अन्य जड़ (बेजान) वस्तुओं के समान ही उत्पन्न होते रहते हैं और समाप्त हो जाते हैं, हां मनुष्य में वह ज़रूर जीव मानते हैं,और उनका इस जन्म में कर्म करना और मरने पीछे उनका फल भोगना भी बताते हैं, परन्तु मनुष्यों का भी वह कोई पहला जन्म वा कोई पहला कर्म नहीं मानते है, उनके धर्म के अनुसार तो यह जो कोई सुखी कोईदुखी कोईराजाकोईरंक कोईतन्दरुस्तकोईबीमार कोईमूर्ख कोई

समझदार आदि भिन्न २ प्रकार की हालते मनुष्यों की दिखाई देरही है, वह सब खुदा (ईश्वर) अपनी इच्छा से ही बनादेता है, वह ही अपनी इच्छा के अनुसार किसी को पापी के घर पैदा करके पाप की शिक्षा दिलाता है और किसी को धर्मात्मा के घर जन्म देकर धर्मात्मा बना देता है, वह जिस को जैसा चाहे बनाता है, इस में किसी के कृत्यों या कर्मों का कोई किसी प्रकार का वास्ता या सम्बन्ध नहीं है, जो कुछ हो रहा है वह केवल ईश्वर की अपनी मर्जी से ही हो रहा है, हां इस जन्म में मनुष्य जो कर्म करता है मरने पीछे उस का फल उसको ज़रूर भोगना पडेगा, प्रत्येक मनुष्य के कर्मों के अनुसार परमेश्वर उनको नरक वा स्वर्ग में जरुर भेज देगा, जहां उनको अनन्त काल तक अर्थात् सदा के लिये रहना होगा, इस पुरस्कार वा दडसे शिक्षा पाकर आगे को उनको अच्छे कर्म करने का कोई अवसर ही नहीं मिलेगा, वह तो नरक वा स्वर्ग में भी कोई ऐसा कर्म न कर सकेगे जिसका उनको दड वा पुरस्कारदेकर कोई दूसरा जन्म देना पडे,अतःउनके धर्मके अनुसार तो मनुष्य को इस एक ही जन्ममें कर्म करने का अवसर दिया जाता है, जिसका फल भोगने के लिये फिर उसको वह सदा के लिये नरक वा स्वर्ग में ही पडा रहना पडेगा ।

इस जन्म के कर्मोंका फल देने के वास्ते भी वह तो परमेश्वर को पूर्ण रूप से वाध्य नहीं करते है, उनके मतानुसार तो यदि ईश्वर की मर्जी होगी तो वह तो किसी पापी को भी स्वर्ग में भेज देगा और चाहेगा तो किसी धर्मात्मा को भी नरक में धकेल देगा,ईसाई तोइस विषयमें खुलमखुला हीयह घोषणा करतेफिरते है कि सबही मनुष्य आदम और हव्वा की सन्तान है,इन दोनों स्त्री पुरुषों ने ईश्वर के द्रोही शैतान के बहकाने से उस वृक्ष का फल खा लिया जिसके खानेसे ईश्वर ने मना कर दिया था,इसही कारण वह पापी होगये और जब वह दोनों स्त्री पुरुष पापी होगये तो

अवश्यमेव उनकीसन्तान प्रतिसन्तानभी पापीहीपैदाहोती चलीजाती है और अपने उत्तम कृत्यों और शुभ कर्मों के द्वारा अपने पापों को दूर नहीं कर सक्ती है, वह तो केवल एक मात्र ईसामसीह को अपना रक्षक मानने से, उसको ईश्वर का एकही अकलौता बेटा मानकर उसकी शरण में आनेसे ही अपने पापों का फल भोगने से बच सक्ते है, जिसने संसार में आकर, नाना प्रकार के दुख उठाकर और सूली पर मारा जाकर ईश्वर को उनसब लोगों के पापों का ऋण चुका दिया है जो उसको अपना रक्षक मानकर उसकी शरण में आते रहते हैं, मुसलमानभी इसही प्रकार इतना जरूर मानते हैं कि मनुष्यों को उनके कर्मोंका फल मिलते समय मुहम्मद् साहब अपने श्रद्धानियों की सिफारिश ईश्वर से जरूर करेंगे और ईश्वर भी उनकी सिफारिश के अनुसार उनकी आम्नाय के लोगों के अपराधों को क्षमा कर देगा, ।

कर्मों का फल देनेके तरीके की बाबत भी मुसलमानों का यह मत है और ईसाई भी क़रीब २ ऐसा ही मानते हैं कि जब से दुनियां बसी है,वा जब से मनुष्यों की नसल चली है,तब से जितने भी मनुष्य मरचुके हैं वा आगे को मरेंगे उन सब के कर्मों की जांच केवल एक दिन उस समय ही की जावेगी जब कि मनुष्यों के पैदा होने और मरने का सिलसिला ही बिल्कुल समाप्त होजावेगा अर्थात जब कि महाप्रलय होकर यह दुनियां ही ख़त्म हो जावेगी, उस समय तक तो सब ही मरे हुये जीव जो संसार के आदिसे मरते चले आरहे हैं, अपने २ कर्मों का फल मिलने की इन्तजार में बेकार ही पड़े रहेंगे, मुनकिर नकीर नाम के दो फरिश्ते(ईश्वर के दूत) जो उनके मतकेअनुसार प्रत्येक मनुष्य के दायें बायें कधे पर बैठे २ प्रतिक्षण उनके बुरे भले कर्मों को लिखते रहते हैं, उनके लिखे हुये दफ़्तर के दफ़्तर इकट्ठे हो होकर केवल एक क़यामत (महा प्रलय) के दिन ही पेश होंगे, ग़रज़ मुसलमान

और ईसाई भी कर्म और उसके फलको मानते जरूर हैं परन्तु बहुत ही सूक्ष्म रूप में और बहुत ही अद्भुत ढंगसे, ।

हिन्दुवों की यद्यपि छह प्रकार की फिलासोफी(सिद्धान्त) हैं जो षट दर्शन के नाम से प्रसिद्ध हैं, परन्तु उनके पुराणों के कथन बहुत ही अद्भुत हैं जो कहीं कुछ और कहीं कुछवर्णन करके बिल्कुल ही एक गोरख धन्धा सा बना देते हैं, परन्तु वह सब ही कर्म और कर्मों के फलको ज़रूर मानते हैं और मुसलमानों और ईसाईयों की अपेक्षा बहुत ही विस्तृत रूप से मानते हैं, जीवों को बिना उनके पिछले कर्मों के किसी को सुखी किसीकोदुखी किसीको ज्ञानी किसी को मूर्ख,किसी को तेज किसीको सुस्त,किसी को नेक किसी को बद बना देना तो वह महा अन्याय और जुल्म ही ठहराते हैं, इसही प्रकार किसी को मिथ्यामति और किसी को समयक श्रद्धानी बना देना, किसी को चोर डाकू वा वेश्या के घर पैदा करके चोरी डकैती वा व्यभिचार की शिक्षादिलाना और किसी को किसी धर्मात्मा के घर पैदा करके धर्म सिखाना और फिर इन सब के ही कर्मों को एक तराजू में तोलना, सब के वास्ते एक ही कानून बनाना तो वह न्याय नहीं किन्तु न्याय का खून करना समझते हैं इस ही कारण वह तो जीवों का पहला जन्म और पहले कर्म भी मानते हैं. जिनके फल स्वरूप ही इन सब जीवों ने भिन्न भिन्न प्रकार का जन्म पाया है और सब की दशा भिन्न २ ही दिखाई देरहीहै. पहला जन्म भी वह एक नहीं मानते किन्तु इस जन्म का कारण पहलेजन्मको और पहिले जन्मका कारण उससेपहले जन्मको और उसका कारण उससे भी पहले जन्म को मान्ते हुये अनादि सिलसिला मानते चले जाते हैं।

मुसलमानों के माने हुये कर्मोंके फल स्वरूप पुरस्कार वा दंड विधान पर भी हिन्दूलोग बहुत आपत्ति करतेहैं औरकहतेहैं कि पुरस्कार वा दंड तो वहही होसक्ता है जिससे शिक्षामिलती हो अर्थात

जिससे प्रभावित होकर लोग आगे को सिंभल जाते हों, बुरे कर्म करने से डरने लगजाते हों और शुभ कर्म करने में रुचि पैदा होने लग जाती हो, परन्तु मुसलमानों के मतानुसार तो सब ही मनुष्यों को उनके कर्मों का फल तबही मिलेगा जब कि यह दुनिया ही समाप्त हो जावेगी, अर्थात् जब कि पुरस्कार रूप वा दंड रूप फल मिलने से प्रभावित होकर उनको किसी प्रकार के कर्म करने का अवसर ही नहीं रहेगा, और फल भी उनके मतानुसार यह मिलेगा कि सब लोग सदा के वास्ते नरक वा स्वर्ग में डाल दिये जावेंगे। न तो वह कभी वहां से निकाले ही जावेंगे और न कभी उनको ऐसा अवसर ही दिया जावेगा जिससे वह आगे को अच्छे कर्म करके दिखावें, इस कारण यह तो किसी भी प्रकार पुरस्कार वा दंड नहीं हो सक्ता है किन्तु यह तो बिल्कुल ही एक प्रकार की ज़बरदस्ती था स्वेच्छाचारिता ही कही जासक्ती है, इससे भी अधिक ईसाईयों की बात तो बिल्कुल ही हंसी के योग्य है जो लोगोंके पापों को क़रज़दार के करज के समान ईश्वर का क़रज़ा बताते हैं, और यह बहकाते फिरते हैं कि ईसामसीहने सूली पर चढ़कर उन सबही मनुष्यों के पापोंका करज़ा चुका दिया है जो उसकोअपना रक्षक मानकर उसकी शरण में आते रहेंगे।

मुसलमान और ईसाइयोंकी तरह हिन्दू लोग केवल मनुष्यों ही में जीव नहीं मानते हैं किन्तु पशुपक्षियों और कीड़े मकोड़े आदि सब ही प्राणियों में जीव मानते हैं और कहते हैं कि इन सब में थोड़ी बहुत जानने की शक्ति ज़रूर है और यह ही ज्ञान शक्ति जीव की पहचान है जो इसको ईंट पत्थर आदि निर्जीव पदार्थों से अलग कराती है, इसही कारण हिन्दू लोग तो वनस्पति में भी जीव मानते है, क्यों कि वृक्ष भी सर्दी गर्मी कोअनुभव करते हैं, छूई मूई का वृक्ष छूने से सुकड़ जाता है, जिससे वृक्षों में भी कुछ न कछ ज्ञान शक्ति का होना सिद्ध है, अब हालमें डाक्टर जगदीश-

चन्द्र बोसने तो अपने अद्भुत यन्त्रोंके द्वारा इस बातको बिल्कुल ही स्पष्ट करके दिखा दिया है और छोटेसेछोटे घासके पौदे में भी ज्ञान शक्ति का होना सिद्ध कर दिया है, इस प्रकार पशु पक्षी कीड़े मकौडे और वनस्पति में भी जीव को मान कर हिन्दू लोग तो साफ़ साफ यह ही श्रद्धान रखते है कि जीव अपने भले बुरे कर्मों के कारण ही कभीमनुष्यकभीपशुकभीपक्षी कभीकीड़ा मकौड़ा और कभी वनस्पति होता रहता है।

मुसलमान और ईसाईयों के कर्म फल मिलने के ढंगपर भी हिन्दू लोग एतराज करते हैं दुनिया की आदिसेअबतक जितने भी मनुष्य मरे हैं वा आगे को मरेंगे उनका सबदुनियां के समाप्त होने तक अर्थात् क़यामत (महा प्रलय) आनेतक बिना कर्म फल मिले बेकार पडा रहना तो बिल्कुल ही बेतुकी बात मानते हैं,क्या ईश्वर को दुनियां के चलाने में लगे रहने के कारण क़यामत तक इतनी फुरसत नहीं मिल सक्तीहैकि वह मरे हुवे मनुष्यों को उनके कर्मोंका फल देता रहे या उसमें इतनी शक्ति नहीं है कि एक समय में दो काम करसके परन्तु दुनियाके चलाने में भी तो अनन्तानन्त कार्य प्रत्येक समय करते रहनेकी ज़रूरत है तब ऐसा शक्ति हीन ईश्वर दुनिया के चलाने का काम भी कैसे करसकता है, हिन्दू लोग तो जीवों के मरने तक नियम रूप से उनके कर्मों का फल न मिलना भी अनुचित समझते हैं, किन्तु जिस प्रकार जो वस्तु हम खाते है उसमेंसे किसी का असर तो तुरन्त होने लगता है, किसी का कुछ देरमें होता है,किसी का असर जल्दी समाप्त होता जाता है और किसी का देरतक रहता है इसही प्रकार कर्मोंका फल मिलना भी वह कर्मों की भिन्न २ शक्तियों पर हर मानते है, अर्थात् कर्मों में भी किसी का फल तो जल्दी मिलना शुरू हो जाता है और किसी का देर में,कोई कर्म देरतक फल देता रहता है,अर्थात अनेक जन्म जन्मान्तर तक असर करता रहता है और कोई इस जन्म में ही

असर देकर रहजाता है। परन्तु हिन्दूवोंका यहसिद्धान्त उनकेदर्शन शास्त्रोंकेही अनुसार है। कथा ग्रन्थोंमें तोउन्होंने मुसलमानी मतकी झलकके तौरपर यह भी कह दिया है, कि दूसरा जन्म धारणकरने से पहले मरेहुवे जीवको बहुत समयतक किसी जगह बेकार पड़ा रहना पड़ता है। और कहीं ऐसा भी बता दिया है कि जबतक उस का बेटा पोता उसका श्राद्ध गया और पिण्डदान आदि नहीं करता है तब तक तो उसकी गति ही नहीं होती है। अर्थात् तबतक तो उस को दूसरा जन्म ही नहीं मिल सकता है। और कही यहां तक कह दिया है कि जिसके बेटा नहीं है,उसकी तो गति होती ही नहीं है।

सबही लोगों के बुरेभले कर्म लिखने रहने के वास्ते प्रत्येक मनुष्य के साथ दो दूत(फ़रिश्ते) नियतकरना भी हिन्दू लोग ईश्वर की सर्वज्ञता में बट्टा लगना मानते हैं। सर्वज्ञता तो तब ही कही जासकी है जब कि भूत भविष्यत और वर्तमान इनतीनों ही काल की दुनियांभरकी सबही सूक्ष्म से सूक्ष्म बातेंभी मालूम रहें। किसी भी बातके जाननेके वास्ते किसीभी वस्तुकी सहायता लेनेकी ज़रूरत न हो,दुनियामें क्याक्याहोचुकाहै। क्याहोरहा है। और क्याहोनेवाला है एकएक कणकीबाबत औरप्रत्येक जीवकी बाबत यहसबबातें मालूम हों तब सर्वज्ञता कही जासकती है। इसही कारण हिन्दुवोंके दर्शन-शास्त्रों के अनुसार तो जीवों के कर्मोंको लिखते रहने के लिये लिखारियोंकी ज़रूरत नहींहोती हैं। ईश्वरअपनी सर्वज्ञता से आपही सब कुछ जानता है, वा प्रकृति आप ही अपनाफल देती रहती है। परन्तु हिन्दुवों की कथा कहानियों में कहींकहीं धर्मराजका दफ्तर क़ायमकर के वहां लोगोंके कर्मोंका लिखा जानाभी बताया है। और यद्यपि संसार में मनुष्यों के सिवाय पशुपक्षी, कीड़े मकौड़े और बनस्पति आदि अनन्तानन्त जीव भरेपड़े है और उन सबमें जीव का होना, कर्म करना और कर्मका फल मिलना सबकुछ माना जाता है परन्तु उस धर्मराजके दफ़्तरमेंतो मनुष्योंके ही कर्मोंके

लिखेजानेका कथनआताहै।इनबेचारे अनन्तानन्त जीवोंकेकर्मोंकेलिखे जानेका तो कुछ भी वर्णन नही मिलताहै। इसकारण सम्भव है कि धर्मराज के दफ़्तरका यह कथन भी मुसलमानों, ईसाईयों वा मूसाइयों से ही लिया गया हो। वा इनकी झलक लेकर ही घडा गया हो। क्योंकि यहही लोग ऐसे हैं जो केवल मनुष्योंमें ही जीव मानते हैं। और उनहीको कर्मफलका मिलना जानते हैं। अन्य प्राणियों में तो वह जीव ही नहीं मानते है। और न उनको कर्म फल मिलनाही जानते हैं। यह अनुमान इस कारण भी दृढ़ होता है कि धर्मराजके दफ़्तरका कथन करने वाले हिन्दू मुसलमानों के फ़रिश्तों की तरह अपने धर्मराजके भी दूतबताते हैं। जिनको किसी मनुष्य की आयु समाप्त हो जाने पर उसके जीव को पकड़ लानेकी आज्ञा होती है। यह दूत कभीकभी ग़लतीसे किसी दूसरे मनुष्यके जीवको भी पकड़लाते हैं। और जब धर्मराजको अपने काग़ज़ों से मीलान करने पर उनकी यह ग़लती मालूम होती है तो तुरन्त उस जीवको वापिस लेजाकर उसहीके शरीरमें छोड़आनेका हुकम होता हैं। और किसी दूसरे ही मनुष्य के जीवको लानेकी ताकीद होती है। यह सब बातें हिन्दू धर्मकी नहीं होसकती है। किन्तु मुसलमान वा ईसाईयों से ही लीहुई मालूम होती है। जो अपने खुदा (ईश्वर) को दुनियाके बादशाहकी तरह मानकर उसका किसी खास स्थानमें रहना तख्तपर बैठकर उसका दर्बार लगना और उसकी आज्ञाओं को पूरा करनेके वास्ते दूतोंका मौजूदरहना मानते है। और इन फ़रिश्तों अर्थात् ईश्वर के दूतोंसे ग़लतीका होते रहना भी बताते हैं। इतिहास वेताओं का कुछ ऐसाभी कहना है कि एकसमय हिन्दु-स्तानके कुछलोग मिस्रदेशमें विद्यासीखनेगयेथे। और वहांसे बड़े २ विद्वान होकर आये थे. किसी २ का तो यहां तक भी ख़याल है कि वह ही लोग मिस्सर जी कहलाये। सम्भव है कि वही लोग वहां से ऐसे २ सिद्धान्त सीखकर आये हों और उनही के द्वारा हिन्दु-

धर्म में यह बातें शामिल होगई हों, कुछ हो, किन्तु हिन्दूधर्म से तो यह बाते अनोखी ही है।

हिन्दू सिद्धान्त शास्त्रों के अनुसार तो परमेश्वर सर्वव्यापक अर्थात् सब ही वस्तुओं में समाया हुआ है। कोई खासजगह उनके रहने की नही है। और वह सर्वज्ञ अर्थात् सब कुछ जानने वाला और सर्व शक्तिमान अर्थात् अनन्तशक्ति रखनेवाला है। उसको न तो जीवोंके कर्मों को जाननेके वास्ते ही किसी दफ़्तर वा लिखारीकी ज़रूरत है। और न जीवोंको कर्मफल देनेके वास्तेही उसको किसी सिपाही प्यादे की कोई आवश्यक्ता है। इसके इलावाहिन्दू सिद्धान्त शास्त्रोंमें तो कहीं कहीं कर्मोंमें ही ऐसी शक्तिमानी गई है। जिससे आपसे आपही उसका चित्र वा सस्कारकर्म करने वाले जीव पर पड़ता रहता है। औरफिर वह संस्कार फलदेता है। जैसाकि नशेकी चीज़ खाने से वह नशा ही मनुष्य को पागल बनादेता है।

हिन्दुवों के पटदर्शनोंमें साख्य दर्शन तो स्पष्ट शब्दोंमें परमेश्वर के अस्तित्वसे ही इनकार करता है। पुरुष और प्रकृति अर्थात् जीव और अजीव यह दो ही द्रव्यमानता है। जीवका जन्म मरण के चक्कर से छूट जाना, और सर्वज्ञ होजाना भी मानता है। परन्तु जीवों को उनके कर्मोंका फल मिलने के विषयमें इससर्वज्ञों का भी कोई सम्बन्ध स्थापित नहींकरता है। कर्म अपनाफल आप ही देते हैं। उसका तो यहही सिद्धान्त है। हिन्दुवोंके इन पटशास्त्रों में सब से अन्तिम वेदान्त है। जो जीव अजीव और परमेश्वर यह तीन अलग २ द्रव्य न मानकर, मुसलमानों की तरह केवल एक परमेश्वर वा ब्रह्म को ही मानता है। मुसलमानोंके सिद्धान्त केअनुसार तो ईश्वरने बिनाकिसी उपादानके, अपनी आज्ञानुसार नास्ति सेही जीवअजीव रूपसर्व पदार्थबनादियेहै। और वेदान्तकेअनुसार जीवतो सब उस ब्रह्मकाही अंशहै। और यह जो रंगारंगकी दुनिया दिखाईदेरही है वह सब उसकी माया है। जिसको वह किसी तरह

भी नहीं बतासक्ते हैं, कि कहां से आई और किस तरह आई, इस मायाकोवहुदा वह धोखा वा सुपनासीकहनेलगते है। किन्तु यहनेही बतासकते, कि यह धोखा या सुपना ब्रह्मको या जीव को पैदा ही क्योंहुआ। मुसलमानतो यहमानतेहैं किईश्वरने जीवोंकेकर्मोंके बिदून ही अपनी मर्जीसे चाहे जिसको अमीर वा ग़रीब, सुखी वा दुखी, ईमानदार वा बेईमान बना दिया। और वेदान्तियों को यहमानना पड़ताहै किआदिमें किसीसमय कर्मरहित शुद्धबुद्ध मब्रह्मपरमेश्वर के ही कुछ अंशोंको नही मालूम क्यों जन्म मरणके चक्कर में फसना पड गया है। प्रब्रह्म परमेश्वर के एक एक अंशका अलग अलग एक एक जीव बन गया है। कर्म करना है। और फल भोगता है। परंतु जब कोईअंश अपनेको ब्रह्म मानकर कर्म करना छोड़देता है। तो कर्मोंके चक्करसे छूटकर फिर ब्रह्म में जा मिलता है। इसप्रकार यह वेदान्ती भी शुद्ध बुद्ध प्रब्रह्मपरमेश्वर को जीवोंके कर्मोंका फल देने वाला नही मानसकते है। प्रश्न होनेपर हैरान होकर कभी उस को निर्गुण और कभी सगुण बताने लगजाते हैं। अंतको कर्मोंमें ही कोई ऐसी शक्तिमाननेपर लाचार होते हैं जिससे वह आपही अपना फल देते रहते हैं।

ग़रज़ कहां तक कहाजावे। हिंदू धर्म में तो नानाप्रकारकी फिलासफ़ी मिलकर कुछ ऐसी खिचडीसी होरही है। कि बेचारे हिन्दुवों को खुद ही यह मालूम नहीं है, कि उनका क्या सिद्धान्त है और क्या उनका विश्वास है। इन भिन्न २ सिद्धान्तों के इलावा हिन्दू पुराणों और कथा ग्रन्थोंने तो हिन्दू धर्म को ऐसा अद्भुत और आश्चर्य जनक बनादिया है कि कुछ भी पता नही चलता है कि असल सिद्धान्त क्या है, जिस प्रकार ईसाईधर्म में परमेश्वर, उसकाबेटा और पवित्रात्मा, इनतीनों के स्वरूपका, इनकी अलग २ शक्तियों और कामोंका पता नहीं मिलता है। वह तीनों अनादि से हैं, वा इनमेंसे कोईकिसीसमयबना है, बना है तो किसनेबनाया है

क्यों वनाया है और किसतरह वनाया है। इनवातोंका वड़े वड़े पादरी भी कुछजवाव नहीं देसकते हैं। इसही प्रकार हिन्दू पुराणों में बृह्मा, विष्णु, महेश, जो यह तीन देवता वर्णन किये गयेहैं। इनका भी कुछ पता नही चलता है, कि वह सर्व व्यापक सर्व शक्तिमान परमेश्वर के ही तीन टुकडे हैं वा उससे अलग हैं। यदि उसही के टुकड़े हैं तो कव हुवे। क्यों हुवे और किसने किये। यदि उससे अलग हैं तव भी यह तीनों कव पैदा हुवे, क्यों पैदा हुवे और किसने पैदा किये। उस पूर्ण वृह्मपरमेश्वर का क्या काम है और इनतीनों का क्या काम है। जीवों के कर्मोंकाफल वह ज्योती स्वरुप परमेश्वर देता हैं वा यह तीनोंदेते हैं।

हिन्दूलोग यद्यपि वृह्माको सृष्टिका पैदाकरनेवाला। विष्णुको पालन करने वाला और शिवको नाशकरने वाला वताते हैं।परंतु पुराणोंमें जो कथा वर्णन कीगई हैं। वह तो विल्कुल इसके विरुद्ध ही पडती हैं। विष्णुभगवान ने रावन और कंसको मारने के वास्ते मनुष्य का जन्म लिया, इससेतो वह नाशकरने वाला होजाता है। शिवजीने घूमते फिरते हुवे अपनी स्त्री पार्वतीके कहनेसे वहुतोंका कारज सिद्ध किया। वहुतोंको मरने से वचाया इससे वह पालन करनेवाले होजाते हैं। इसके अलावा विष्णुभगवान किसतरह पालन करते हैं और शिवजी क्योंकर सहार करते हैं उनकेकाम क्या क्या हैं इसकाभी कुछ जवाव नही मिलता है। हिन्दुवोंमें तो विष्णु के मानने वाले वैष्णव और शिवके माननेवाले शैवी यह दोअलग २ पथ होकर खूवही खेंचातानी हुई है। वैष्णुवोंने शिवकी, और शैवोंने विष्णुकी खूव ही दिल खोलकर वुराईकी है। पुराणोंमें भी किसीमें तो विष्णु को वढ़ाकर शिवको विल्कुल नीचे गिरा दिया है। और किसीमें शिवको वढ़ाकर विष्णुको नीचादिखाया है। फिरजव वैष्णव और शैवोंमें सलूक हो गया है तो ऐसे भी कथा ग्रन्थ वन गये हैं जिनमें इनदोनों देवताओं का सलूक करोकर इनदोनोंको वरावर

करके दिखादिया है। इनकथा ग्रंथोंके कथनानुसार तो इन देवताओं को खुशकरके वस्तु स्वभावके विरुद्धभी कारजकरालियागयाहै। और करालियाजासक्ताहै। परंतुजब इनशक्तिशाली देवताओंकोरावण वा कंस आदि एक एक मनुष्यके मारनेके वास्ते भी संसार में जन्म लेना पड़ा है। सारी उमर मनुष्य अवस्थामें बिताकर बड़ी मुश्किल से ही उनको मारा है तो यह देवता संसारके अनन्तानन्त जीवोंको उनके कर्मोंकाफल देने वाले तो किसी तरह भी नहीं माने जासक्ते हैं। इस संसार में तो कोई एक क्षणभी ऐसा नहीं बीतता है जिसमें असंख्याते जीव न पैदा होते हों और असंख्याते ही न मरते हों। तब क्षण २ में इनके कर्मोंका फल देकर इनको दूसरा जन्म धारण कराने वाला तो ऐसा नहीं होसक्ता है। जिसको एक एक मनुष्यके मारनेके वास्ते ही मनुष्यका जन्म लेना पड़ता हो। ग़रज़ हिन्दू कथाग्रन्थोंसे तो कर्मोंकाफलदेने वालेका कुछभी पतानहीं चलता है। कभी इधर और कभीउधर योंही अंधेरे मेंही भटकते रहना होताहै।

हिन्दू कथा ग्रंथोंकी एक कहानी सुनिये। विश्वामित्र एक छत्री राजा था। जो एक बार वशिष्टऋषिके आश्रम में जा निकला ऋषिने अपनी काम धेनु गायके प्रताप से राजा और उसकी सारी सेनाकी खूब अच्छी तरह दावतकी। राजाने वहगाय ऋषिसे मांगी न देनेपर जबरदस्ती लेनी चाही। इसपर ऋषिने राजाकी सारी सैना नष्टकरदी और उसके सौबेटे भी अपने श्राप से भस्म करदिये, इसहार से उदास होकर विश्वामित्र तपकरने लगा। और शिवजी को प्रसन्न करके उसके सब अस्त्र शस्त्र लेकर फिर वशिष्टसे लड़ने आया। वशिष्टने उसकेसब शस्त्रबेकार करदिये। विश्वामित्रने फिर तपकिया जिससे वह ब्राह्मण और महाऋषि होगया। त्रशंकु एक राजा था। वशिष्ट जिसका पुरोहित था। उसने वशिष्टसे कहा कि मुझको इसहीशरीरसे स्वर्गपहुंचादो। वशिष्टने ऐसाहोना असम्भव बताकर इनकार करदिया। तब वह राजा वशिष्टके सौ बेटोंके पास

गया और जब उन्होंने भी इनकार कर दिया तो दूसरा पुरोहित बनाना चाहा। वशिष्टके बेटोंने इसबात से नाराज होकर उसको शाप दिया कि तू चाँडालहोजा। राजाचांडाल होगया। और रोता हुवा विश्वामित्र के पास गया जिसने वशिष्ठसे अपने पुराने वैर का बदला लेने के वास्ते वायदा किया कि मैं तुमको इस ही शरीर से स्वर्गपहुचादूगा।इसकेवास्ते विश्वामित्र नेसब मुनियोंको बुलाकर राजा से यज्ञ कराना शुरू किया। सब ऋषिआये पर वशिष्टके सौ बेटे नहीं आये। विश्वामित्र ने अपने क्रोध से उनसबको भसम कर दिया। इस बात से भय खाकर सबही ऋषि यज्ञ करने लगे परन्तु राजा के चांडाल होजाने के कारण देवतालोग यज्ञका भाग लेने नहीं आये तब विश्वामित्रने राजा से कहा कि अच्छा तुम हमारे ही तपके बलसे स्वर्ग जाओ। विश्वामित्रके मु हसे यहबात निकलते ही राजा आकाश की तरफ उड़ा। इन्द्रने उसको बीच ही में रोका राजा नीचे गिरनेलगा। तब विश्वामित्रने अपने तपके बलसे उसको वहां ठहरा दिया। फिर देवताओं पर क्रोध करके विश्वामित्रने एक दूसरी ही दुनिया बनानी शुरू करदी। दक्षिणकी तरफ़ सप्त ऋषि और नक्षत्र सब बनाये और तरह तरह के प्राणी और बनस्पति बनाकर जब इन्द्र आदि देवता भी दूसरे बनाने चाहे तो देवता लोग घबरा कर उससे क्षमा मांगने आये। विश्वामित्र ने अपनी बनाई हुई सृष्टि कायम रख कर और राजा को आकाश में एक गृह के समान स्थापित करके तबही क्षमा दी। एक बार पानी नहीं बरसा और भारी दुष्काल पड़गया। उस समय विश्वामित्र एक चांडाल के यहां भिक्षामांगने गये।वहांसे कुत्तोंका मांस मिला। विश्वामित्र ने उसही मांसकी सब देवताओंको बलिदी। देवताडरके मारे कांप गये और इन्द्रने तुरन्तही पानी बरसा दिया। इसकेबाद विश्वामित्र और वशिष्ठ में बड़ा भारी युद्ध हुआ जिससे तीनलोक कांप गया।

इस प्रकार जो ज़रासा क्रोध आने पर एकदम सैंकड़ों को

भस्म कर डालें उनको ऋषि और महा ऋषि मानना और उनके तप में इतना वल वताना कि देवताभी कांपने लग जावें। यह तपकी हसी उड़ाना नहीं तो और क्या है। विश्वामित्र ने देवताओं से नाराज होकर अपने तपके वल से परमेश्वर की सृष्टि से अलग विल्कुल ही एक दूसरी सृष्टि घनानी शुरू करदी और वह कुछ वन भी गई। तव क्या परमेश्वर ही उससे डरकर अपने विरुद्ध उसकी दूसरी सृष्टि वनाने लग गया था वा उसके तपमें ही ऐसा वल था जिससे परमेश्वर की मरज़ी के विरुद्धभी अपने आपही दूसरी दुनिया वननी शुरू होगई इसही प्रकार जव कोई ऋषि क्रोध में आकर किसी को शाप देता है। तो क्या परमेश्वर को ही उनका यह सव उचित अनुचित शाप पूरा करना होता है वा उनके शाप में ही कोई ऐसी शक्ति है जिससे वह परमेश्वर की सहायता के विदून आपही आप अपना काम कर देता हो। यदि परमेश्वर को ही यह सव उचित अनुचित करना पड़तो है। और अपने विरुद्ध कार्य करने पर भी मजवूर होता है। तब तो उस सर्वशक्तिमान को परमेश्वर ही नहीं कहना चाहिये। वल्कि उचित अनुचित सवही कार्य कर देने वाला एक बेउज़र चाकर ही समझना चाहिये। और यदि परमेश्वर की सहायता के विदून तपके वल से ही यह सव कुछ हो जाता है। तव जीवोंके सवही कर्मोंमें यह शक्ति मानने में क्यों हुज्जत हो सक्ती है। कि वहभी अपना फल आपही देदेते हैं। वह भी किसी ईश्वर का सहारा ढूंढने की ज़रूरत नहीं रखते हैं। इसके इलावा विश्वामित्र ने नई सृष्टि वनाने में जो नाना प्रकार के प्राणी और वनस्पति आदि वनाये वह कहांसे वनाये। क्या जीव भी नये वनाये जासकते हैं। यदिऐसा है तो मुसलमानोंके सिद्धान्त को व्यर्थही क्योंदोष दियाजाता है। कि खुदाने आदिमें किस प्रकार जीव वनाये और उनके पहले कर्मोंके विदून किस प्रकार उनका खास २ प्रकार का जन्म और खास २ प्रकारकी दशा स्थापितकी।

और फिर मुसलमान तो सर्व शक्तिमान परमेश्वर के द्वाराही ऐसा होना कथन करतेहैं पर यहां तो एक तपस्वी ने ही और महा क्रोधी तपस्वी ने ही सब कुछ कर दिया। इस प्रकार हिन्दू कथा ग्रन्थों में तो किसी भी सिद्धान्त का विचार नहीं रक्खा गया है। जो जी में आया लिखते चले गये हैं।

हिन्दू कथा ग्रन्थों और स्मृतियों ने मरे हुवों का श्राद्धकरना जारी करके तो कर्म सिद्धान्त को बिल्कुल ही ठुकरादिया है। बेटा जब तक अपने मरे हुवे बापका श्राद्ध न करे तब तक मरे हुवे की गति ही नहीं होसकतीहै। तब तक वह दूसरा जन्म ही धारण नही करसकता है। यूं ही बेकार पड़ा रहता है। बेटा जो कुछ खाना कपड़ा गाय भैंस और खाट खटोली अपने मरे हुवे बाप को देना चाहे वह ब्राह्मण को देदे तो वह सब चीज़ ब्राह्मणके पास रहते हुवे भी उस मरे हुवे को पहुच जाती है। उसके भोगमें आने लगजाती है। यह सब बाते ऐसी हैं जो इस बात का बिल्कुल ही निषेध करती हैं। कि जीव अपने ही किये कर्मों का फल पाता है। इसके अतिरिक्त यह समझ में नही आता है कि मुसलमान, ईसाई, बौद्ध और जैनी जो अपने मरे हुवोंका श्राद्ध नही करते हैं उनकी गति कैसे होती होगी और होती भी होगी वा नही। वह तो शायद मुसलमानोंके कथनके समान क़यामत तक बेकारही पड़े रहेंगे। इस के सिवाय अनन्तानन्त पशु पक्षी कीड़े मकौड़े और वनस्पति आदि जो प्रतिक्षण असंख्य ही मरते रहते हैं उनका भी तो कोई श्राद्ध नही करता है वह भी सब बेकार ही पडे होंगे और कुछ भी गति नहीं पा सके होंगे। तब यह जो असंख्य जीव प्रतिक्षण पैदा होते रहते हैं वह कहां से आते हैं। मुसलमान लोग जो यह मानते हैं कि मनुष्य के सिवाय अन्य किसी प्राणी में जीव नहीं है। शायद उनही के सिद्धान्त की झलक लेकर केवल मनुष्यों को ही गति के लियेश्राद्धका यह सिद्धान्त चला है।

मुसलमान लोग तो मनुष्य का पहला जन्म और पहला कर्म न मानकर ईश्वरको ही ऐसा स्वछन्द सर्वाधिकारी मानते हैं कि वह चाहे जिसको जैसा बनादे। किसी को सुखी रखे वा दुखी यह सब उनकी मर्जी पर ही अवलम्बित है। इस कारण यदि वह उसकी स्तुति गा गाकर वा खुशामद करकरके वा कुछ चढ़ावा चढ़ाकर खुशकरना चाहें और अपने आचरण को ठीक रखने की तरफ़ विशेष ध्यान न देवें तो आश्चर्य ही क्या है। किन्तु आश्चर्य तो यह है कि हमारे हिन्दू भाई भी जो अपने किये कर्मों से ही सब कुछ दुख सुख मिलना मानते हैं वह भी अपने आचरण की दुरुस्ती पर अधिक ध्यान न देकर सच्चिदानन्द शुद्ध बुद्ध परब्रह्म-परमेश्वर वा देवी देवताओंकी खुशामद करने और चढ़ावा चढ़ाकर उनको प्रसन्नकरने की ही कोशिश में लगे रहते हैं। "मेरे अवगुण मत न चितारो, मुझे अपना जानकर तारो" अर्थात् मेरे दोषों और पापो पर कुछ भी ध्यान न देकर मुझे अपना भक्त और बडाई गाने वाला समझ कर ही मुझे संसार के दुखों से बचाये रखो, मेरे सबकारज सिद्धकरते रहो। इसही प्रकार की प्रार्थना करते रहना ही सब लोग जरूरी समझने लग गये हैं। जिससे साफ मालूम होता है कि उन को अटल रूपसे अपने कर्मों का फल मिलने का विश्वास नहीं है किन्तु खुशामद से खुशहोकर ही परमेश्वर सब कुछ देदेता है यह ही उनका दृढ़ श्रद्धान है। इस ही का यह नतीजा है कि दुनिया में भलाई का निशान भी दिखाई नही देता है। सब तरफ पाप ही पाप फैलरहा है। यहां तक कि यह काल ही कलियुग वा पाप का काल कहलाने लग गया है।

यदि किसी समय किसी राज्य की प्रजा को यह यक़ीन हो जाय कि हमारा राजा और उसके सब हाकिम उनकी स्तुति गाने वा खुशामद करने, गिड़ गिड़ाने और नज़र भेंट देने से खुश होकर अपराध क्षमा कर देते है। अपराधी को छोड़ देते हैं। जो

मांगे वह देभी देते है तो उस राज्य में जितने भी अधिक अपराध होने लगे उतने ही थोड़े हैं। अपराधों से बचने का भय तो तबही हो सक्ता है जब कि सबके मन में यह विश्वास दृढ़ता के साथ बैठा हुवा हो कि दूध का दूध और पानी का पानी छनता है खुशामद करने, स्तुति गाने और नज़र भेट देनेसे तो कुछ भी नहीं होता है। ऐसा विश्वास न होने पर तो बडा ही भारी अन्धेर मंच जाता है।

स्वामी दयानन्द के अनुयायी आर्यसमाजी भी यद्यपि कहते तो यह ही हैं कि जीव को उसके कर्मों का फल ज़रूर मिलता है। इसमें बाल बराबर भी फ़रक़ नहीं हो सक्ताहै। परन्तु इश्वरको कर्मों का फल देने वाला मानने के कारण वह भी अधिकतर परमेश्वर की स्तुति भक्ति को ही मुख्य समझते हैं। जैनी लोग जो कर्मों का फल देने वाला कोई ईश्वर नहीं मानते किन्तु कर्मों में ही फल देने की शक्ति बताते हैं। इसही कारण कर्मोंका फल मिलना अटल और आवश्यक समझते हैं। "कर्म गत टारी नाही टरे" इसही विषयके गीत गाया करते हैं। अपने पूज्य तीर्थंकरों अर्हंतो सिद्धों को सांसारीक झन्झटों से बिल्कुल अलग और बेताअल्लुक़ बताते हैं। रागद्वेषके फन्दे से छूट कर इच्छा और कषायके मैल को धोकर एकमात्र सच्चिदानन्द स्वरूप ही हो गये है। अपने ज्ञानानन्दमें मग्न रहने के सिवाय अन्य किसी भी बात की तरफ रुचिही नहीं करते हैं। परम वैरागी हो रहेहे। इसही प्रकार अपने आचार्य उपाध्याय और सर्व साधुवोंक भी इस परम वैराग्य के साधन में लगा हुवा जानकर ही पूजते हैं। यह ही जैनियों के परम इष्ट है। जिनके वीतराग रूप गुणों की याद करने से, उनकी भक्ति स्तुतिकरने से, सांसारीक जीवों के हृदय में भी शान्ति आती है, कषाय दबती है। पुन्यकी प्राप्ति होती है और इस प्रकार पुन्य की प्राप्ति होने से अपने सांसारीक कार्य भी सिद्ध हो सकते है, परन्तु यह तबही हो सकता

है जब कि किसी सांसारीक कार्य की सिद्धि के वास्ते उन की भक्ति स्तुति न कीजावे किन्तु उन के वीतराग रूप गुणों की बड़ाई अपने हृदय में जमाने के वास्ते ही अपने हृदय में भी वीतराग रूप भाव- लाने के लिये ही उन की भक्ति स्तुति कीजावे। सिद्धान्त तो जैनियों का ऐसाही है परन्तु शोक के साथ कहना पड़ता है कि जैनी लोग भी अपने पड़ौसी हिन्दू मुसलमानों की देखा देखी अपनी कषायों को दबाने और राग द्वेष को हटानेकी तरफ़ कुछ भी ध्यान न देकर अपने परम वैरागी पंच परमेष्ठी से ही अपने सांसारीक कारजों के पूरा कराने की प्रार्थना करने लग गये हैं। ऐसा करने से वह तो अपने हिन्दू और मुसलमान भाईयों से भी बहुत नीचे गिर गये हैं क्योंकि वह तो अपने परमेश्वर को संसार का प्रबंध करता मान कर ही उस से अपने सांसारीक कारज सिद्ध कराना चाहते हैं परन्तु जैनी लोग तो अपने सांसारीक कार्य उन से पूरा कराना चाहते हैं जिन को वह संसार से मुह मोड़ कर परम वैरागी हुवा मानते हैं। ऐसी हालत में मानो जैनी तो अपनी सांसारीक इच्छाओं में बिल- कुल ही अंधे हो रहे हैं।

यद्यपि जैन सिद्धान्त शास्त्रों में ऐसी अंधी अभिलाषाओं से पाप पैदा होकर उन के सांसारीक कार्यों की सिद्धि में रोक पैदा हो जाने का उपदेश दिया गया है। परन्तु सिद्धान्त शास्त्रोंके कथन पर कौन ध्यान देता है। वह तो जब अपने पड़ौसियों को देखते हैं कि बिल्कुल ही बेपरवाही के साथ चाहे जैसे खोटे कर्म करते रहने पर भी वह अपनी बुरी भली सब ही प्रकार की सांसारीक अभिला- षाओं को पूरा कराने के वास्ते अपने ईश्वर की खुशामद करने लग जाते हैं तो जैनी भी इस ही तर्कीब को सहज समझ कर काम में लाने लग गये हैं और कुछ नहीं सोचते हैं कि हम किस से अपने सांसारीक कार्यों की सिद्धि कराने की प्रार्थना कर रहे हैं। ऐसा करने से हम पुन्य कमारहे हैं वा पाप कर रहे हैं। ऐसा करने से

हमारी इच्छायें पूरी होंगी वा पाप पैदा होकर उन में और भी रोक पड़ जायगी, इन बातों पर तो कुछ भी ध्यान नहीं देते हैं, "माखी बैठी शहद पर पख दिये लिपटाय, हाथ मलै और सिर धुनै लालच बुरी बलाय" इस प्रकार अधिक लालची तो अंधा हो कर अधिक नुक़सान उठाया ही करता है।

खैर-आज कलके जैनी जो चाहें करें, हम उन का ज़िकर छोड़ कर जैन सिद्धान्त की ही बात लिखते हैं कि जैन धर्म में भी हिन्दुवों के समान प्रत्येक प्राणी में जीव माना है। जो अपने कर्मों के अनुसार कभी मनुष्य और कभी पशु पक्षी वा वनस्पति आदि होता रहता है। परन्तु इस धर्म में कर्मों का फल देने वाला कोई परमेश्वर नहीं माना जाता है। कर्म स्वयम ही अपना फल देता है ऐसा उन का सिद्धान्त है। इस ही कारण जैनी लोग कर्मों का फल देने वाले ईश्वर के मानने में बड़ी २ बहस उठाते हैं। जैसा कि यदि कर्मों का दड वा पुस्कार देने वाला कोई परमेश्वर होता तो वह प्रत्येक को उन के भले बुरे कर्मों की और उन कर्मों का अलग २ जो दड वा पुरस्कार मिला है उस की जानकारी ज़रूर कराता जिससे वह आगे को सिभलें और बुरे कर्म करने से बच कर अच्छे ही कर्मों में लगें, यह ही दड वा पुरस्कार देने का अभि प्राय होता है। परन्तु यहां सब जीवों को तो क्या मनुष्यों को भी यह ख़बर नही है कि वह पिछले जन्म में क्या थे, क्या कर्म किये थे और उन के किन किन कर्मों के कारण उन की यह वर्तमान दशा बनाई गई है। जिससे प्रत्यक्ष सिद्धहै कि कर्मोंका फल देने वाला कोई हाकिम नही है। कर्मों के स्वभाव के अनुसार आप ही इन का फल मिल जाता है। इस फलसे आगामी के वास्ते किसी को कुछ शिक्षा मिले या न मिले इस से इन कर्मों को कुछ भी मतलब नहीं है। वह तो अपने स्वभावा नुसार ही काम करते हैं। जैसा कि जो वस्तु खाई जाती है वह अपना बुरा भला असर शरीर के ऊपर ज़रूर करती

है। किन्तु वह खाई हुई वस्तु यह नही वताती है कि मैंने क्या असर किया और क्यों किया। वह तो हाकिम वन कर दड वा पुरस्कार नहीं दे रही है, आगे के वास्ते शिक्षा देना उस का काम नही है इस ही कारण कुछ भी नही वताती है। किन्तु अपने स्वभाव के अनुसार ही काम करती है। इसही प्रकार कर्म भी अपना कार्य कर जाते हैं।

ऐसा ही यदि दड वा पुरस्कार देने वाला कोई ईश्वर होता तो वह किसी को भी ऐसी सज़ा न देता जिससे वह वनस्पति आदि वन कर वहुत ही ज्यादा मंद वुद्धि हो जावे और अपने वुरे भले को पहचानने और उन्नति करने के योग्य ही न रहे। किन्तु जिस प्रकार राजा लोग वडे वड़े अपराधियों को भो जेल खाने में वड़े २ हुनर सिखाकर उत्तम जीवन विताना सिखाते हैं। इस ही प्रकार वह ईश्वर भी पापियों को ऐसी ही जगह जन्म देता जहां वह पाप से वचने और पुन्य कर्म करनेकी ही योग्यता प्राप्त करते। इस ही कारण वह तो किसी पापी से पापी जीव को भी चोर डाकू वा वेश्या आदि पापियों के घर जन्म देकर पाप की शिक्षा न दिलाता। वह तो महा पापियोंको भी ऐसा ही जगह पैदा करता जहां वह उत्तम २शिक्षा पावें और नेक ही वन जावे। यदि परमेश्वर कर्मोका फल नहीं देताहै कर्म आपही अपना असर कर देतेहैं तो उन कर्मों पर ऐसा कोई इल्ज़ाम नहीं लगसक्ता है। क्योंकि कर्म तो किसी के शिक्षक नहीं है, न किसी वात के प्रवन्ध कर्ता हैं किन्तु वह तो अपने स्वभावानुसार ही अपना कार्य करते है। जैसा कि शरावके पीने से यदि शराव ही अपने स्व भावानुसार पीने वाले की वुद्धि को ऐसा विगाड देती है जिस से वह उलटे कर्म करने लगता है तो इस में शराव पर तो कोई भी इल्ज़ाम नही लग सक्ता है। क्यों कि शराव तो किसी के भले वुरे की ज़िम्मेदार नहीं वह तो वेचारी अपने स्वभावनुसार ही काम करती है। हा यदि कोई वुद्धि मान

प्रबंध कर्ता शराब पीने वाले की बुद्धि भ्रष्ट कर देता है तो उस पर तो बेशक बहुत बड़े २ इल्ज़ाम लगते हैं। जिस से ऐसा कोई प्रबंध कर्ता सिद्ध ही नहीं हो सक्ता है।

यदि ईश्वर सृष्टि का प्रबंध कर्ता होता और सर्वज्ञ और सर्व शक्ति मान भी होता तब तो संसार में पाप का निशान भी न रहता। परन्तु दुनिया में तो पाप कूट कूट कर भरा हुवा है इस से साफ़ साबित है कि कोई ऐसा प्रबंध कर्ता नहीं है। जो कुछ हो रहा है वह सब वस्तु स्वभाव से ही हो रहा है। इस ही से बुरा भी हो रहा है और भला भी।

मुसलमान और ईसाई आवागमन को अर्थात् जीव का मर कर एक पर्याय से दूसरी पर्याय में जाने को दूसरा जन्म धारण करनेको नहीं मानतेहैं और इसपर अनेक प्रश्न उठाते हैं जिनका ठीक ठीक उत्तर ईश्वर को कर्मों का फल देने वाला मानने वाले नहीं दे सकेहैं। और न आवागमन को ही ठीक तरह सिद्ध कर सक्ते हैं, यह आवागमन भी तब ही सिद्ध हो सक्ता है जब कि वस्तु स्वभाव से ही यह सब उलटन पलटन मानी जावे। वस्तु स्वभाव के मानने वालों को तो इस में किसी दलील के ढूढने की ज़रूरत ही नहीं है। यह तो साफ़ ही दिखाई दे रहा है कि एक ही जमीन मे लेमू नारंगी नाश्पाती आम अमरूद नीम गन्ना आदि तरह तरह की बनस्पति बोई जाती है। बिना बोये भी तरह तरह की बनस्पति उग आतीहै। पानी भी उन सब को एक ही कूवे का दिया जाताहै। हवा भी सब को एकही प्रकारकी लगतीहै। किन्तु वह ही मिट्टी वह ही हवा अलग २ वृक्षों में जाकर बिल्कुल अलगही अलग आकार धारण कर लेती है, पत्ते फल फूल उन की सब ही चीज़ बिल्कुल अलग ही अलग प्रकार की हो जाती हैं। चाखने में कड़वा खट्टा रस और सर्द वा गर्म आदि स्वभाव भी उन का बिल्कुल भिन्न २ ही हो जाताहै। इस ही मिट्टी पानी और हवा से घास पात बन-

ते है जिन के खाने से पशु पक्षियों के भी भिन्न २ प्रकार के शरीर बनते है। मनुष्यों के शरीर पलते हैं और भिन्न २ आकार के ही बनते रहा करते हैं। ग़रज एक ही प्रकार की मिट्टी पानी और हवा भिन्न २ प्रकार की वनस्पति, भिन्न २ प्रकार के पशु पक्षी और भिन्न २ प्रकार के मनुष्यों का आकार धारण करती है। फिर इन सबही का वह शरीर मिट्टी में मिल जाता है और फिर भिन्न २ प्रकार के बीजों का सहारा पाकर वह ही मिट्टी नाना प्रकार की वनस्पति रूप बन जाती है। इस प्रकार एक ही तरह की बेजान (जड़) वस्तु संसार के सब ही जीवों का भिन्न २ आकार का शरीर बनती रहती है। वह ही मिट्टी पानी और हवा कभी एक प्रकार के जीव का शरीर बनती है और वह ही शरीर मिट्टी में मिल कर फिर दूसरे प्रकार के जीव का शरीर बन जाता है। इस ही तरह एकही मिट्टी अदल बदल कर सब ही प्रकार के जीवों का शरीर धारण करती रहती है। इस ही प्रकार अपने २ भिन्न २ कर्मों के कारण यह जीव तरह तरह के शरीर धारण करता रहता है और उस ही के अनु-सार काम करने लगता है। यदि कोई पुरुष किसी मकान में बन्द कर दिया जावे जिस में कोई भी मोरी वा झरोखा न हो तो वह बाहर की चीज़ों को बिल्कुल भी नहीं देख सकेगा। और यदि उस मकान में कोई एक दो सुराख़ वा मोरी झरोखा होगा तो उन ही के द्वारा कुछ देख सकेगा। यदि वह मकान ऐसा होगा कि वह हिल चल भी न सके वो हिल चल भी न सकेगा। ग़रज़ जैसा उस का मकान होगा उस ही के अनुसार काम कर सकेगा। इस ही प्रकार भिन्न २ प्राणियों के भिन्न २ शरीरों में भिन्न २ प्रकार की ज्ञानेन्द्रीय अर्थात् आंख नाक कान जिह्वा और त्वचा होने से और भिन्न २ प्रकार की कर्म इन्द्रिय अर्थात भिन्न २ प्रकार के हाथ पैर आदि होने से अपने २ कर्मों के अनुसार उन भिन्न २ शरीरों में आ बसने वाले जीवों के कार्य भी अपने २ शरीर के अनुसार भिन्न २ ही प्रकार के

हो जातेहैं। इस प्रकार आवागमन तो आपसे आपही प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। जिसका सबूत ढूंढने की कुछ भी ज़रूरत नहीं है। किन्तु ज्ञानवान परमेश्वर को कर्मों का फल देने वाला मानने में तो आवागमन का सिद्ध करना बिल्कुल ही असम्भव हो जाता है। संसार में तो चारों तरफ़ यह ही दिखाई दे रहा है। कि एक जीव दूसरे जीव को खारहा है। यहां तक कि अधिकतर जीवों का जीवित रहना ही दूसरे जीवोंको खाते रहनेपर अवलम्बितहै। वह ही उनकी खूराकहै। यह सब खून खराबा, यह ऐसा महा भयानक प्रबन्ध किसी ज्ञानवान परमेश्वर का बांधा हुवा तो किसी तरह भी नहीं हो सक्ताहै। ऐसे जीव भी वह ही बनावे जो दूसरे जीवों को खा कर ही जीवित रह सक्तेहों। और ऐसी शक्ति और कठोर हृदयता भी वह ही उनको देवे जिस से वह जीवों को मार २ कर खाने लगजावें, जिन २ जीवोंको मार कर वह खाते हों उन को भी वह ही बनावे, उन का भी वह ही मां बाप कहलावे, उनके पालन पोषणका कष्ट भी वह ही उठावे, क्यों ? इस कारण कि जब वह पाल पोस कर जवान कर दिये जावें तो अन्य जीव उन को मार कर खा जावें, क्या किसी बुद्धिमान ईश्वर का यह अद्भुत प्रबंध माना जा सक्ता है। हर्गिज़ नहीं और किसी तरह भी नहीं, कुत्ते में बिल्ली के मार डालने की भड़क और बिल्ली में चूहों को मार खाने की लालसा भी वह ही पैदा करे, बिल्ली की आंखें भी वह ही ऐसी बनावे जिस से वह अंधेरे में भी देखसके और उस के पैरों के नीचे गद्दियां भी वह ही लगावे जिस से रात को उस के पैरों को आहट चूहों को मालूम न हो पावे, चूहे बड़ी आसानी से उस के क़ाबू में आजावें, और उधर चूहों को भी वह ही पाले, उन का भी धरती के कीड़े मकौड़े खाने का स्वभाव बनावे और फिर बिल्ली पर चूहों के मारने का इल्ज़ाम लगा कर और चूहों को कीड़े खाने का दोषी ठहरा कर उन को भी कड़ा दंड देता रहे, यह बातें तो बिल्कुल ही बेजोड़ हो जाती हैं। और

किसी तरह भी नही मानी जा सक्ती हैं। मुसलमानों के धर्म के अनुसार भी सांप विच्छू आदि दुखदाई प्राणियों को भी वह ही ईश्वर पैदा करता है। वह ही उन को पालता है। वह ही उन में दुख देने की शक्ति और स्वभाव पैदा करता है। फिर वह ही मनुष्यों को इन सब दुख दाई प्राणियों को मारडालने की आज्ञा देता है उन का मार डालना बहुत बड़ी पुन्य का काम बताता है, ऐसी ही बे-सिर पैर की अन्य भी अनेक बातें हैं जो सृष्टि का कोई प्रबध कर्ता मानने से ही माननी पड़ती हैं।

मकड़ी को देखो, कैसा अद्भुत जाला तंती है। जिस में मक्खी भुनगा फसा हुवा किसी तरह भी नहीं निकल सक्ता है। पर मकड़ी उस ही जाल पर दौड़ी फिरती है। और ज़रा भी नहीं उलझती है। झट पहुच कर फसी हुई मक्खी को खा जाती है। यह ही उसकी खूराक है। परन्तु कोई समझ दार मनुष्य यह नहीं मान सक्ता है। कि कोई ऐसा सर्वशक्तिमान ईश्वर है जिसने ही मक्खी का यह स्वभाव बनाया है। कि वह मक्खी भुनगों को जाल में फसा कर खाती रहे। वह ही उस को ऐसा जाल बनाना सिखावे और फिर मक्खी भुनगों को भी वह ही बनावे, वह ही उन को पालने पोसने और रक्षा करने का ज़िम्मे दार ठहराया जावे। वह ही मकड़ी को इन मक्खी भुनगों के खाजाने का अपराधी ठहरा कर दड भी दिया करे। और दड भी ऐसा देता रहे जिस से फिर भी वह इस ही प्रकार जीव भक्षक बनजायें। शेर भेड़िया आदि पशु, चील बाज़ शिकरे आदि पक्षी और मगर मच्छ आदि जलचर जिन का स्वभाव ही दूसरे जीवों को मार कर खा जाने का है। जिन का आहार ही परमेश्वर ने जीवों को मार कर खा जाना बनाया है। वह सब अपने पिछले पापों का दड स्वरूप ही तो ऐसे जीव भक्षक बनाये गये हैं कि अन्य प्रकार पेट ही नहीं भर सक्ते हैं। यदि यह उन के पिछले पापों की सज़ा नही है तो क्या उन के पिछले पुन्य

के बदले उनको ऐसा जीव भक्षक बनाया गया है। इस प्रकार परमेश्वर को कर्म फल दाता मानने की अवस्था में तो आवागमन का ढांचा ही नहीं बध सक्ता है। कर्म और कर्म फल का सब मामलाही मलियामेट हो जाता है। तदबीर और तक़दीर का झगड़ा भी परश्वर को कर्म फल दाता मानने से नहीं निमटता है। जब सब कुछ परमेश्वर का ही किया होता है। जब वह ही उनकी तक़दीर वा भाग्य बना देताहै। जो कुछ होना है। वह पहले से ही ठहरा देता है। तो फिर तदबीर बेचारी किस तरह इस तक़दीर (भाग्य) के अन्दर घुस सक्ती है। कैसे कुछ काम कर के दिखा सक्ती है। विधना के अक्षर जब किसी तरह भी मेटे नहीं मिट सक्ते हैं। तब तदबीर (उपाय) की क्या मजाल हो सक्ती है। जो वह बीच में कूद पड़े और परमेश्वर के लिखे को मिटा दे।

मालूम नहीं परमेश्वरकी यह लिखत कहां लिखी रहतीहै। कब लिखी जाती है। और क्यों लिखी जाती है। क्या हमारी तरह परमेश्वर को भी हमारी तरह अपनी जानी हुई बात के भूल जाने का या कुछ से कुछ याद रह जाने का सदेह है। जो वह भी लिखने का कष्ट उठाता है। और उस को पढ़ २ कर ही कार्य करता है। किसी हिन्दू दर्शन शास्त्रसे तो यह पता लगता नहीं कि वह लिखता है। कब लिखता है और कहां लिखता है। हां लोगों को यह कहते ज़रूर सुना है कि वह मनुष्य के ललाट अर्थात् माथे पर लिखता है। इस के सबूत में वह मनुष्य की खोपरी में कुछ लकीरें भी दिखाते है। जो खोपरी की हड्डियों के जोड़ के सिवाय और कुछ भी नहीं होता है। खैर, मनुष्य की खोपरी में तो वह इस जोड़ को ही ईश्वर की लिखत बता देते हैं। पर यह जो अनन्तानन्त पशु पक्षी और कीड़े मकौड़े मरते रहते हैं उन की खोपरी में वा अन्य किसी स्थान में ऐसी भी कोई लकीरें नहीं दिखा सके हैं। अनेक प्राणियों के तो कोई खोपरी वा हड्डी ही नहीं होती है। जैसे बनस्पति और

छोटे २ कीड़े, तो क्या इन सब प्राणियों के कर्मों को ईश्वर कण्ठस्थ किये रखता है। वा ऐसा बारीक लिखता है। जो किसी को भी दिखाई न दे सके, तब मनुष्यों के ही भाग्य को ऐसी मोटी २ लकीरों में क्यों लिखता है। जो सब को दिखाई दे, हमारी समझ में तो यह सिद्धान्त मुसलमानों से ही सीखा हुवा मालूम होता है। वह ही मनुष्यों के सिवाय अन्य प्राणियों में जीव नहीं मानते हैं। इस ही कारण उन की कोई क़िस्मत भी नहीं ठहराते हैं। वह तो केवल मनुष्यों में ही जीव मानते हैं। उन ही की तक़दीर वा क़िस्मत ठहराते हैं। उन ही के भाग्य का माथे पर लिखा रहना बताते हैं। "पेश आयगा वह ही जो कुछ कि पेशानी में है" यह उन ही की कहावत प्रसिद्ध है। यह ही बात उन से सुन कर हिन्दुवों ने भी कहनी शुरू कर दी है और कथा ग्रन्थों में लिख दी है। परन्तु यह नहीं सोचा कि यदि हमारा परमेश्वर ऐसा याद दाश्त का कच्चा है। तो उस को सृष्टि के अनन्तानन्त पदार्थों के अनन्तानन्त गुण और स्वभाव ही कैसे याद रह सके हैं। एक एक परमाणु में अनन्तानन्त गुण हैं और दूसरे अनन्तानन्त परमाणुओं से मिलनेसे भिन्न २ प्रकार की अनन्तानन्त अवस्था बनाते रहते हैं। यह अनन्तानन्त अलटन, पलटन मिलना और बिछड़ना नवीन २ अवस्था धारण करना प्रत्येक क्षण २ में हो रहा है। तब ऐसी कच्ची याद दाश्त वाला जिस को मनुष्यों का भाग्य लिखने की ज़रूरत होती है। ऐसी अनन्तानन्त सृष्टि का प्रबन्ध कर्ता कैसे हो सकता है।

अब तक़दीर और तदबीर के मामले पर विचार कीजिये, किसी के पिछले कर्मों के कारण परमेश्वर ने उस के भाग्य में यह ठहरा दिया कि वह तलवार से क़तल हो या ज़हर देकर मारा जावे तब अपने इस ठहराव को पूरा करने के लिये वह ही परमेश्वर दूसरे किसी मनुष्यको उसे तलवारसे क़तल करनेके लिये या ज़हर देकर मार डालने के लिये उकसावेगा, तब ही उसकी तक़दीर

का लिखा पूरा हो सकेगा। उस के कर्मों का फल मिल सकेगा, जो समय और जो क्षण उस के क़तल होने वा ज़हर देकर मारा जाने का ईश्वर ने ठहरा दिया होगा उस ही क्षण के लिये मारने वाले को मारने के लिये तय्यार रक्खेगा तब ही यह कार्य पूरा हो सकेगा। इस ही प्रकार किसी के भाग्य में उस का माल चोरी जाना लिखा है, तो परमेश्वर को उस की किस्मत का लिखा पूरा करने के लिये ज़रूर किसी न किसी से उस के घर चोरी करानी होगी। जितना माल और जो जो माल उस की किस्मत में चोरी जाना है। उतना ही और वह ही माल चोर उठाले जावें न अधिक उठा सकें न कम। इस का भी पक्का २ प्रवन्ध परमेश्वर को ज़रूर २ करना होगा। इस ही प्रकार किसी के भाग्य में धोखा खाना और नुक़सान उठाना है तो इस का भी प्रवन्ध परमेश्वर ही करेगा। वह ही धोखा देने वाले बनावेगा और उन से उतना ही धोखा दिलावेगा जितना धोखा खाना और नुकसान उठाना उस की किस्मत में है। इस ही प्रकार किसी से मार खाना, गाली सुनना, जलील होना, या अन्य किसी प्रकार दुख उठाना उस की तकदीर में है। तो इन सब कामों का वन्दोवस्त भी परमेश्वर ही करेगा। वह ही ऐसे आदमी मुकर्रिर करेगा जो उस ही समय पर उस को मारें गाली दें ज़लील करें और सिर्फ उतना ही मारें, वैसी ही गाली दें, उतना ही जलील करें जितना उस के भाग्य में है। न ज्यादा कर सकें न कम, इन सब ही बातों का पूरा पूरा वन्दोवस्त परमेश्वर को करना होगा। इस ही प्रकार जो सुख किसी को मिलता है। कारज सिद्ध होते है। काम बनता है। पैसे की प्राप्ति होती है। नेकनामी मिलती है। जस होना है इन सब बातों का प्रबध भी परमेश्वर को ही बांधना होगा। वह ही ऐसे आदमी क़ायम करेगा जो लोगों के भाग्य के अनुसार ही उन का काम बनावें और जसगावें, जितना किसी के भाग्य में हो उस से ज़रा भी कमती या वढ़ती न करने पावें।

गरज़ प्रत्येक मनुष्य को जन्म से मरण तक जो कुछ भी सुख दुख उस के पिछले कर्मों के वा उस के भाग्य के अनुसार उस को मिलता है वह सब परमेश्वर ही दूसरे मनुष्यों के द्वारा दिलावेगा। और केवल मनुष्य ही के लिये नहीं किन्तु सब ही जीवों के वास्ते परमेश्वर को यह बदोबस्त बांधना पड़ेगा। ऐसी दशा में आपही सोचलें कि प्रत्येक जीव का जो कार्य दूसरे जीवों के प्रति उन के अनुकूल वा प्रतिकूल होगा वह कार्य स्वयम उन का किया हुवा होगा वा परमेश्वर का कराया हुवा। यह तो रही दूसरे जीवों के द्वारा सुख दुख पहुचाने की बात, इस ही प्रकार जो सुख दुख प्रत्येक जीव को उस के अपने ही हाथों पहुचाना होगा, उस के भाग्य में ऐसा ही लिख दिया होगा कि अपने ही हाथों वह ऐसा दुख उठावे वा सुख पावे तो वह सब काम भी ईश्वर ही उस के हाथों उस से करावेगा। तब ही तो भाग्य का लिखा पूरा होगा, "जाको हरिदारुण दुखदेंही, ताकी मति पहले हरलें ही" यह कहावत प्रसिद्ध ही है। इस प्रकार प्रत्येक मनुष्य और अन्य सब ही प्राणियों का सब ही बुरा भला कृत्य परमेश्वर का ही कराया हो जाता है। जीव का अपना तो कोई भी कर्म नहीं रहता है। तब वह इन कर्मों का ज़िम्मेदार कैसे हो सका है। कैसे इन का दंड वा पुरस्कार पाने का भागी बनाया जा सक्ता है। इस हेतु ईश्वर को कर्म फल दाता मान कर तो कर्म और कर्म फल मिलने की बात ही नहीं बैठ सक्ती है। और न जीव की कोई तक़दीर ही बंध सक्ती है। तदबीर तो इन बेचारों की कुछ रहती ही नहीं है। इस प्रकार तक़दीर, तदबीर, कर्म और कर्म फल कुछ भी न रह कर सब ही बातों की सफ़ाई हो जाती है। बना बनाया सारा महल ही गिर पड़ता है। यहां तक कि उस की नीव का भी पता नहीं रहता है। सब ही बातें आकाश के फूलों की तरह झूठी और कल्पित हो जाती हैं। ईश्वर को कर्मों का फल देने वाला मानने वाले बेसोचे समझे यह

तो कहने लग जाते हैं कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है। परन्तु कर्म फल भोगने में परतन्त्र है। परन्तु जब उन से कर्म फल मिलने के तरीके पूछे जाते हैं। प्रत्येक जीव की भिन्न २ दशाओं उन की सब तरह की मजबूरियों और परतन्त्रता के कारण पूछे जाते हैं तो उन के सब कार्य उन के पिछले कर्मों के वसही मानने पड़ते हैं। कुछ भी स्वतन्त्रता बाक़ी नहीं रह जाती है। यदि कोई जीव हमारा भला या बुरा हमारी ही भली बुरी किस्मत के कारण करता है। तब तो उस ने वह कार्य अपनी स्वतन्त्रता से नहीं किया है किन्तु ईश्वर ने ही हमारी क़िस्मत का लिखा पूरा करने के वास्ते उस से ज़बरदस्ती कराया है। और यदि हमारी क़िस्मत के बिदून भी कोई अपने आप हमको किसी प्रकार की हानि या लाभ पहुचा सक्ता है तब तो ईश्वर के सारे प्रबध में ही फ़रक आजाता है। ईश्वर तो किसी को उस के पिछले कर्मों के अनुसार सुख देना चाहता है। और दूसरा कोई अपने कर्मों के करने में स्वतन्त्र होने के कारण उस को दुख पहुचाने लगे, या ईश्वर तो किसी को दुख देना चाहे और दूसरा कोई जीव उस को सुख देने लगजावे तो किस का किया बनेगा, ईश्वर का या उन दूसरे जीवों का, ईश्वर की परम शक्ति प्रबल रहेगी या स्वतन्त्र कम करने वाले जीवों की स्वतन्त्रता, ग़रज़ ईश्वर को कर्म फल दाता मानने में तो सब ही तरह मुश्किल पड़ जाती है। और कोई भी बात क़ायम नहीं होती है।

यह सब बातें तो तब ही ठीक बैठती हैं। जब कि कर्मों के अपने स्वभाव से ही उन का फल मिलना माना जाता है। यह ही बात प्राकृतिक है जैसा कि हम आगे चलकर इस पुस्तक में दिखायेंगे।

अध्याय पहला

वस्तु स्वभाव

ससार में जितनी भी वस्तु हैं। वह सब अपना २ अलग २ स्वभाव रखती हैं। इस ही कारण कह जाता है कि उस ने भग धतूरा

खालिया इस कारण पागल हो गया, इस ही बात को परमेश्वर को ही सब बातों का हर्ता कर्ता मान ने वाले यों कह सक्ते हैं कि भग धतूरा खा लेने के कारण परमेश्वर ने उस को पागल बना दिया। हकीम ने उस को कपास की जड़ कूट कर पिलादी जिस से भग धतूरे का नशा उतर गया, वा हकीम के दवा पिलाने से परमेश्वर ने उस का नशा उतार दिया। वैद्य ने एक आदमी को जमाल घोटा खिला दिया वा अमलतास पिला दिया जिस से उस को दस्त लग गये वा वैद्य ने दस्त की दवा खिलादी इस कारण ईश्वर ने उस को दस्त लगा दिये। बुरी सगति में बैठने से उस मनुष्य की आदत बिगड गई वा बुरी सगति में बैठने से ईश्वर ने उस की आदत बिगाड़ दी। उस आदमी ने विषय भोगों में सब धन लुटा दिया इस कारण निर्धन हो गया। वा विषय भोगों में सब धन लुटा देने के कारण ईश्वर ने उस को निर्धन बना दिया। उस मनुष्य के पास एक भी पैसा नही था और न वह कुछ कमाई करता था इस कारण भूखों मरने लगा, वा न तो उस के पास पैसा था और न उस ने कुछ कमाया इस कारण परमेश्वर ने उस को भूखोंमारा। उस लड़के ने पढने की तरफ़ कुछ भी ध्यान नहीं दिया खेल कूद में हो रहा इस वास्ते अनपढ़ रहगया। वा उस ने पढ़ने की तरफ ध्यान नही दिया इस वास्ते ईश्वर ने उस को अनपढ़ ही रक्खा। वह लिखने पढ़नेमें खूब ध्यान देताथा इस कारण विद्वान हो गया। वह पढ़ने में बहुत मिहनत करता था इस कारण ईश्वरने उस को विद्वान बना दिया। डंड पेलने व्यायाम करने और घी दूध खाने से वह बलवान होगया। डड पेलने आदिके कारण ईश्वर ने उस को बलवान कर दिया। इस ही प्रकार ससार के सब ही लाखों करोड़ों कार्यों के फल की बाबत वस्तु स्वभाव मानने वाले तो यह कहते है कि अमुक कार्य ने यह फल दिया और परमेश्वर को हर्ता कर्ता मानने वाले कहतेहैं कि अमुक कार्य का फल परमेश्वर ने यह दिया।

नीम कडवा है इस कारण उस के चबाने से मुंह कडवा हो जाता है, इस को चाहे यूं कहलो कि उसने नीम चबाया था इस वास्ते ईश्वर ने उस का मुंह कडवा कर दिया। नमक खारा होता है, इस कारण उस के खाने से मुह खारा हो जाता है, वा जो नमक खाता है, ईश्वर उस का मुंह खारा कर देता है। लेमू खट्टा होता है, इस कारण दांत खट्टे करदेता है वा जो लेमू खाता है, ईश्वर उस के दांत खट्टे कर देता है। मिसरी मीठी होती है, इस कारण मुंह मीठा कर देती है, वा जो मिसरी खाता है, ईश्वर उस का मुंह मीठा कर देता है। दियासलाई के रगड़ने से आग जल उठती है, वा जब हम दियासलाई को रगड़ते हैं तो ईश्वर उस में आग जला देता है। आग पर रखने से पानी गरम होता है, वा जब हम पानी को आग पर रक्खें तो ईश्वर उस को गरम करने लग जाता है। इस प्रकार दोनों ही तरह कहनेमें कुछ विशेष अन्तर नही आता है। क्योंकि चाहे जिस तरह कहा जावे यह भिन्न भिन्न कार्य तो सब भिन्न २ कारणों के होने से ही होते हैं। ससार में जो यह लाखों करोड़ों वस्तु भरी पड़ी है वह सब ही अपना अलग २ स्वभाव रखती हैं। तब ही तो वह अलग २ समझी जाती हैं। यदि उन के स्वभाव और उन के कार्य अलग २ न होते तब तो वह सब एक ही होती अलग २ लाखों करोड़ों प्रकार की न कहलातीं। उन के अलग २ स्वभाव और अलग २ कार्यों के कारण ही तो मनुष्य उन से अलग २ काम लेता है। लोहा लकड़ी से अधिक मज़बूत होता है। इस कारण जहां एक फुट मोटी लकड़ी लगाते हैं। वहां तीन चार इंच मोटे लोहे को ही काफ़ी समझते हैं। सोने का बहुत बारीक तार और बहुत बारीक पत्तर बन सक्ता है। लोहे या लकड़ी का ऐसा बारीक या पतला नहीं बनसक्ता, मिट्टी आग में पकाने से पकी हो जाती है। और लकड़ी जल जाती है। इस कारण मिट्टी की ही ईंट और तरह २ के बर्तन बना कर आग में

पकाते हैं। लकड़ी या गोबर के बर्तन बना कर आग में नहीं पकाये जाते हैं।

परमेश्वर के ही द्वारा सब काम होना मानने वाले इन सब कामों को भी इस प्रकार कह सक्ते हैं। कि मिट्टी की ईंट वा बर्तन बना कर जब आग में रख दिये जाते है, तो परमेश्वर उन को पका बना देता है। परन्तु यदि लकड़ी या उपले में आग लगाई जाती है, तो परमेश्वर उन को पक्का नहीं कर सक्ता किन्तु जला कर राख वा कोयला ही करना पड़ता है। इस ही प्रकार अन्य भी सब कामों की बाबत ऐसा ही कहा जा सक्ता है। जैसा कि यदि किसी की आंख में भूल कर भी मिरच का हाथ लग जाय तो परमेश्वर उस की आंख में जलन पैदा कर देता है। और फिर घी लगा देने से वह जलन उस को हटा देनी पड़ती है। देवदार की लकड़ी पर अगर खाती (बढ़ई) रंदा चलावे तो परमेश्वर जल्दी २ उस के मोटे २ पत्तर उतारने लग जाता है। और यदि वह ही रंदा शीशम की लकड़ी पर चलाया जावे तो परमेश्वर बहुत ही आहिस्ता २ और बहुत ही बारीक २ पत्तर उतारता है। और यदि वह ही रन्दा ,पत्थर वा लोहे पर चलाया जावे तो परमेश्वर उस पत्थर वा लोहे के पत्तर तो नहीं उतार सकेगा किन्तु उलटा, उस रंदे को ही घिस कर खराब कर देगा। फिर यदि उस घिसे हुवे रंदे को लकड़ी पर भी चलाया जावे तो परमेश्वर लकड़ी के भी पत्तर नहीं उतार सकेगा। इस प्रकार ईश्वर के ही द्वारा सब कार्य होते हुवे मानने में भी परमेश्वर अपनी मर्ज़ी से तो कुछ भी नहीं करता है। किन्तु जैसा वस्तु का स्वभाव होता है। उस ही के अनुसार उसका कार्य कर दिखाता है। वस्तुओं के स्वभावके विरुद्ध तो कुछ भी नहीं करता है। मिट्टी के बर्तनों को ही आगमें पकाने से पक्का बना सक्ता है। उन के साथ जो लकड़ी वा उपले रक्खे जाते हैं। उन को तो जला कर राख ही कर देना होता है। इस ही प्रकार

अन्य भी सब बातों में परमेश्वर को भी वस्तु स्वभाव के ही अनुसार करना पड़ता है।

परन्तु परमेश्वर के ही द्वारा संसारके सब कार्य होते रहना मानने में एक कठनाई ज़रूर पड़ती है। जब बढ़ई (खाती) लकडी को बसूले से घडता है, तो परमेश्वर लकड़ी को काट काट कर उस पर से छेपटी उतारने लगता है। जिस जगह बढ़ई बसूला मारता है परमेश्वर भी वहीं से लकडी काटता है। और बढ़ई जितने ज़ोर से बसूला मारता है, परमेश्वर भी उतनी ही कोशिश से लकडी काटने लगता है। इस ही प्रकार यदि अन्य भी सब कार्य परमेश्वर ही करता है। तो यह भी मानना पडता है कि जब क़साई गाय वा बकरी की गर्दन पर छुरी चलाता है तो परमेश्वर ही उस गाय वा बकरी की गर्दन काटने लग जाता है। ज्यों २ क़साई छुरी चलाता जाता है त्यों त्यों परमेश्वर गर्दनकाटता रहता है। इस ही प्रकार जब शिकारी किसी जानवर पर गोली चलाता है तो ईश्वर ही उस गोली को उस जानवर तक लेजा कर उस के शरीर में घुसेड़ता है और जान से मार डालता है। इस ही प्रकार जब कोई हत्यारा किसी मनुष्य पर तलवार या गोली चलाता है तब भी उस मनुष्य के मार डालने का सब काम परमेश्वर को ही करना पड़ता है। कोई किसी को लाठी वा घूसे से मारता है तब भी चोट खाने वाले के शरीर पर तो परमेश्वर ही चोट मारता है। इस ही प्रकार यदि कोई किसी स्त्री के साथ ज़बरदस्ती कामसेवन करता है तो यह सब काम भी परमेश्वर को ही पूरा करना होता है। चोर ने किसी धनी को बेहोशी की दवा सुंघादी इस कारण परमेश्वरने उस धनी को बेहोश कर दिया और चोर बड़ी आसानी से उस माल को उठा कर लेगया। ग़रज़ संसार के सब कार्य परमेश्वर के ही द्वारा मानने में तो ससार के सब ही पापों, कुकर्मों और अपराधोंका करनेवाला वा करनेमें सहायता देनेवाला वा पूर्ण

कर देने वाला वह परमेश्वर स्वयम ही वन जाता है। इस कारण परमेश्वर को वीच में न डाल कर संसार के लोगों को यह ही मानना पड़ता है कि सव काम वस्तुओं के अपने स्वभाव से ही हो रहा है। वढ़ई ने लकडी पर कुल्हाड़ा मारा तो परमेश्वर ने लकडी फाड़ दी ऐसा न मान कर यह ही मान ना पड़ता है कि वढ़ई ने कुल्हाड़ा से लकडी फाड़ दी। कसाई ने छुरी से गाय की गर्दन काट दी, चोर ने दवा सुंघा कर धनीको वेहोश कर दिया। हवा से उड़ कर आग छप्परपर आगिरी जिससे छप्पर जलने लगा,इतनेमें मेंह आगया और खूव मूसला धार वरसा जिस से वह आग वुझ गई, जितना छप्पर जल कर राख हो गया था उस राख को भी वह मेंह वहा लेगया, धरती ने मेंह के पानी को चूस लिया जो वच गया वह आगे को वहता चला गया, आगे ज़मीन ऊंची थी इस वास्ते पानी रुक गया, इस ही प्रकार प्रत्येक वस्तु में अलग २ गुण हैं। वह सव अपने २ गुणों के अनुसार ही काम करते हैं। जो चीज़ किसी दूसरी चीज़ पर असर डाल ने का स्वभाव रखती है वह उस पर असर भी डालती रहती है। वस्तुओं के इन ही भिन्न २ स्वभावों के कारण संसार में तरह तरह के कार्य होते रहते हैं और भिन्न २ प्रकार के परिणाम निकलते रहते हैं। किसी ने वहुत शराव पीली और पागल हो कर उलटे पुलटे काम करने लगा, तव यह नहीं माना जावेगा कि उस के शराव पीलेने के कारण परमेश्वर ही उस को पागल वना कर उस से उलटे पुलटे काम करा रहा है। किन्तु शराव में ही ऐसा गुण माना जावेगा जो पीने वाले को ऐसा पागल कर देती है कि वह वुरे वुरे काम करने लगता है। शराव पीने का ही यह परिणाम है कि वह पागल हो गया और वुरे २ कार्य करने लग गया, एक आदमी दिन भर दौड़ा फिरा जिस से वह थक गया, इस की वावत भी यह नहीं कहा जावेगा कि उस के दिन भर दौड़ने फिरने के कारण परमेश्वर ने उस को थकान चढ़ा

दिया किन्तु यह ही माना जावेगा कि दौड़ते रहने के कारण उसको थकान हो गया वह नङ्गे पैर कांटों में घुस गया जिससे उस के पैर में काटे चुभ गये इस में भी उस के कांटों में घुसने का ही यह परिणाम माना जावेगा कि उस के पैर में कांटे चुभ गये, वह आज बहुत खा गया है इस वास्ते उथला पडा है। उठा भी नहीं जाता है। इस में भी उस के अधिक खा लेने का ही सीधा यह परिणाम है। वह बाज़ार में जाता हुवा आगे को देखता हुवा नहीं जाताथा, आसमान की तरफ़ देखता हुवा ही जा रहा था, वा कोई कागज़ पढ़ता हुवा जा रहा था, इस कारण उसने सामने से आते हुवे मनुष्यों से, वा पशुओं से वा गाड़ी से वा दीवार से टक्कर खाई और बहुत चोट आई। इसमें भी यह सब परिणाम उसके देख कर न चलने का ही है। परमेश्वर को बीच में डालने की तो इसमें कुछ भी ज़रूरत नही है। वह स्त्री बड़ी फूहड़ है। रोटी बनाते समय सिभाल नही रखती है इस कारण हाथ पैर और धोती चादर जला लेती है। यह भी सब फल उस की सिभाल न रखने का ही है। वह दूकानदार बडा मीठा बोलता है पूरा तोलताहै, माल भी खरादेता है और दामभी अधिक नहीं लेता है इसकारण,गाहक ज़्यादा करके उस ही की दूकानपर जाते हैं,वहदूसरा दूकानदार बड़ा नकचढ़ा है सीधी तरह बात भी नहीं करता है। माल भी ख़राब रखता है। दाम भी अधिक लेता है और तोल में भी कम देता है इस वास्ते उसके पास गाहक कम जाते हैं। इस में न तो परमेश्वर ग्राहकों को खींच कर पहले दूकानदार के पास ले जाता है और न दूसरे दूकानदार के पास जाने से रोकता है किन्तु इन दोनों दूकान दारों के व्यवहार का ही यह नतीजा है। इस ही प्रकार सब ही कर्मों का नतीजा निकलता रहता है।

दूसरा अध्याय
जीव और उस के कर्म

जीव और अजीव यह दो ही वस्तु दुनिया में हैं। जिनमें ज्ञान शक्ति है वह जीव हैं। ईंट पत्थर लकड़ी लोहा जिनमें जानने की शक्ति नहीं है वह अजीव है। मनुष्य और पशु पक्षी आदि जो जीव कहलाते हैं उनका भी शरीर तो अजीव ही है। उस शरीर के अन्दर ज्ञान शक्ति रखने वाली जो अदृश्य वस्तु है वह ही जीव है। इस ही वास्ते जब जीव शरीर में से निकल जाता है। जिस को मर जाना कहते हैं तो शरीर में जानने की शक्ति नहीं रहती है। जीव निकलता हुवा भी दिखाई नहीं देता है। जिस प्रकार ईंट पत्थर आदि अजीव पदार्थ आंखों से दिखाई देते हैं। हाथ से छूये जा सक्ते हैं। नाक से सूघे जा सक्ते हैं और जीभ से चाखे जा सक्ते हैं। आपस में टकराने से उन की आवाज़ भी सुनाई देती है। इस प्रकार जीव न तो दिखाई दे सक्ता है न छूआ जा सक्ता है न सूंघा जा सक्ता है न चाखा जा सक्ता है और न टक्कर खाने से उस में कुछ आवाज़ ही होती है इस ही कारण वह अमूर्तीक कहलाता है। हिलना चलना और ठहरना अर्थात् क्रिया तो अजीव पदार्थोंमें भी होती है परन्तु मान माया लोभ क्रोध आदि कषाय, भोग विलास, रति अरति शोक और भय आदि अजीव में नहीं होते, यह सब बातें तो उस ही देह में देखी जाती है जिस में जीव होता है। समय बताने वाली घड़ी में जीव नहीं होता और न कूक भरने से ही उस में जीव आजाता है परन्तु कूकने से उस की सूई चलने लग जाती है। चाबीके खिलोने भी कूकनेसे अनेक प्रकार हिलने चलनेलग जाते हैं। लट्टू घुमाने से देर तक घूमता रहता है। फोनो ग्राफ़का बाजा भी खूब गीत सुनाता है। रेल वा मोटर भी जिस में कोई जीव जुता हुवा नहीं होता है खूब दौड़ती है। कहीं से कहीं पहुंचा देती है। नदी का पानी पहाड़ों से बह कर समुद्र तक जा पहुंचता है। रेत और पत्थर भी उस के साथ बहुत दूर तक लुड़के चले जाते है। लकड़ी और घास फूस तो पानी के ऊपर ही तैरते चले आते

हैं। धूप की गर्मी से पानी भाप बन कर आसमान में उड़ जाता है। इस ही वास्ते गीले कपड़ों को धूप में डाल कर सुखाया जाता है। हवा तो आप ही उड़ी फिरती है और दूसरी चीज़ों को भी उड़ा कर कहीं की कहीं लेजाती है। आग सब से ही ज़्यादा ऊधम मचाती है लाल लाल जीभ बनाकर ऊपर को जाती है और दूसरी चीज़ों को भी भस्म कर के हवा में मिलाती है, वा धूआं बना कर ऊपर को चढ़ाती है। किसी बर्तन में पानी भर कर जब आग पर रख दिया जाता है तो उबल कर अव्वल तो वह बर्तन में ही खूब चक्कर लगाने लग जाता है। बुल बुले बनकर ऊपर को उठता है। और फिर ज्यादा गर्मी पाकर तो इतना ज़ोर करता है कि अपने ऊपर के ढकन को भी उतार करफेंक देता है। और बाहर निकलने लग जाता है मनुष्य बहुतेरा ही चाहता है कि पानी उबल कर बाहर न निकले पर जब तक तेज़ आंच लगती रहेगी पानी हर्गिज़ नहीं मानेगा, वह तो उफान आ आकर बाहर निकलता ही रहेगा, ग़रज़ कहां तक कहें हिलना चलना तो अजीव पदार्थों में भी प्रत्यक्ष ही है। इस ही से ससार का सब काम चलता है। रात दिन का हाना, मौसमोंमें बारिश का बरसना आदि सब काम अजीव पदार्थों की क्रिया से ही होते है परन्तु क्रोध मान माया लोभ चिन्ता भय इच्छा द्वेष हसी खुशी रोना और रज करना, सुख मानना वा दुख यह बातें अजीव में नहीं होती है। यह तो जीव में ही देखी जाती हैं। जितने भी जीव संसार में देखे जाते हैं वह सब देह धारी होते हैं। देह तो उन का अजीव पदार्थों का बना हुआ होता है इस कारण कुछ भी ज्ञान शक्ति नहीं रखता है। ज्ञानशक्ति तो उस जीव में ही होती है जो देह के अन्दर होता है और दिखाई नहीं देताहै। इस प्रकार देह के साथ एकमेक होकर यह जीव अपनी इच्छाओं और कषायों के अनुसार देह को हिला चिला कर तरह २ के काम करता रहता है। जीव की इन इच्छाओं और कषायों के अनुसार

जो भी क्रिया होती है वह ही इस जीव के बुरे भले कर्तव्य कहलाते हैं। अजीव पदार्थों को तो न तो कोई दुख सुख ही होना है और न उन की कोई क्रिया उन की किसी इच्छा वा कषाय के कारण ही होती है। उन में तो इच्छा वा कषाय ही नहीं है तब हो कैसे, उन की तो जो भी क्रिया होती है वह सब विना उन की किसी प्रकार की इच्छा वा कषाय के उन के अपने स्वभाव से ही होती है। न उन में कोई इरादा है और न इरादे से उन की कोई क्रिया होती है। इस ही कारण अजीव पदार्थों की क्रियाओं से उन को कोई कर्म बधन नही होता है। जिस के फल स्वरूप उन को कुछ सुख दुख भोगना पड़े। हां जीव अपनी इच्छाओं और कषायोंके द्वारा जो क्रिया करता है वा अपने शरीर से कराता है वा मनमें विचार-ता है उन सब का फल दुख सुख रूप उस को ज़रूर भोगना पड़ता है। यह ही उस के कर्म कहलाते हैं।

ससार के सब ही जीव देह धारी हैं। देह अजीव है जिस के अन्दर जीव रहता है। इस प्रकार जीव अजीव की घनिष्ट सगति रहने से ज्ञान रहित शरीर का असर ज्ञान वान जीव पर और जीव का असर देह पर बराबर पड़ता रहता है। दो चीजों के मिलाप में यह ही हाल हुवा करता है। जैसा कि यदि कोई डाक्टर किसी को बेहोशी की दवा सुंघावे तो वह दवा तो अपना असर अजीव देह पर ही करेगी परन्तु उस के असर से उस की देह में ऐसा परि-वर्तन हो जायगा जिस से ज्ञानवान जीव के ज्ञान पर भी पर्दा पड़ जायगा। और वह उस वक्त तक बेहोश रहेगा जब तकउस दवाका असर उस की देह पर रहेगा, इस ही प्रकार नशा पीने से यद्यपि वह नशे की वस्तु देह पर ही असर करती है परन्तु देह पर असर होने से जीव भी पागल हो कर अहकी बहकी बकने लगता है। इस ही प्रकार देहमें किसी प्रकार की चोट लगनेसे वा कांटा लग-ने से जीव को भी दुख होता है यद्यपि चोट देह को ही लगती है।

और कांटा भी देह में ही चुभता है। काम उत्पन्न करने वाली वस्तु खाने से काम अङ्ग में तेज़ी पैदा होकर जीव को भी काम विकार पैदा हो जाता है। शरीर में पित्त के बढ़ जाने से जीव के स्वभाव में भी फुर्ती तेजी और क्रोध पैदा हो जाता है, खट्टी वस्तु खाने को जी चाहने लगता है। बलग़म के बढ़ जाने से जीव का भी स्वभाव धीमा और सहनशील हो जाता है, मिठाई खाने को जी चाहने लग जाता है।

इस ही प्रकार जीव में किसी प्रकार की भड़क पैदा होने से शरीर पर भी उस का असर पड़ता है, जैसा कि किसी के गाली देने से वा अन्य किसी प्रकार क्रोध आजानेसे देह में भी गर्मी और तेज़ी आजाती है, आंखें लाल हो जाती हैं, किसी सुन्दर स्त्री को देखने और काम उत्पन्न करने वाली बातें सुनने से जब काम वासना भड़क उठती है तो शरीर में भी उसके चिन्ह दिखाई देने लग जाते हैं। किसी भारी भय के आने पर बदन भी थरथर कांपने लग जाता है और पसीना आ जाता है, रंज की बात याद आने से मुख मलीन हो जाता है, रंग फीका पड जाता है और आंखों से आंसू बहने लग जाते हैं। ग़रज देह का और जीवका गहरा मेल हो रहने के कारण देह का असर जीव पर और जीव का असर देहपर बराबर पड़ता ही रहता है।

शरीर की स्वयम् अपनी क्रियाओं का भी असर शरीर पर होता रहा करता है, जैसा कि दंड पेलने से, मुद्गर हिलाने से, क्रिकिट वा फुटबाल खेलने से, भागने वा दौड़ने से, वा अन्य प्रकार शरीरको हिलाने चलाने से शरीरमें फुर्ती आती है। प्रत्येक अंग अपना काम अच्छी तरह से करने लग जाता है, भूख बढ़ती है, खाना हज़म होता है, पाखाना साफ़ आता है, तन्दुरुस्ती पैदा होती है, और शरीर गठीला और मोटा, ताज़ा होने लग जाता है, परन्तु यदि शरीर को हिलाने चलाने की ये ही क्रियायें शरीर की शक्तिसे अधि-

क की जावें तो शरीर दुबला पतला होने लग जाता है और अन्य भी अनेक खराबियें पैदा हो जाती हैं। यहां तक कि यदि अधिक थकान हो जाय तो ज्वर होकर अधिक रोग पैदा होजायं इस ही प्रकार शरीर से काम न लेने से, बिल्कुल ही सुस्त पड़ा रहने से भी तन्दुरुस्ती बिगड़ जाती है, और कमज़ोरी आजाती है, कुछ दिनों तक किसी अंग से बिल्कुल ही काम न लेने पर तो वह अंग बिल्कुल ही बेकार हो जाता है।

जीव की कषायों में भी हलन चलन होने से जीव के स्वभाव में बड़ी अलटन पलटन होजाती है। जिस बच्चे के साथ अधिक लाड़ होता है, उसकी अच्छी बुरी सब ही इच्छाओं को पूरा किया जाता है, उसके रो पड़ने वा रूठ जाने से डर कर उसको कोई खोटा काम करने से भी नहीं रोका जाता है, तो वह बहुत ही ज्यादा ज़िद्दी, आज्ञा का न मानने वाला, और बेशरम, मूर्ख, नालायक़, विषयासक्त, अपनी इच्छाओं का गुलाम, स्वार्थी, निकम्मा,. किसी की कुछ न सहने वाला, उद्दंड, अदूरदर्शी, विचारहीन, मुंहफट, मुंहज़ोर और बदतमीज़ हो जाता है, यह दशा उसके स्वभाव की हो जाती है। इस ही बुरे स्वभाव के कारण जब वह अपने खाने पीने, बैठने उठने, और जागने, पहनने, ओढ़ने, खेलने, कूदने आदि सब ही कामों में कुछ भी आगा पीछा नहीं सोचता है। जब जो जी में आया वही करने लग जाता है, चाहे कुछ ही परिणाम निकले इसकी कुछ भी परवाह नहीं करता है तो इसके फल स्वरूप इसको तरह २ की बीमारियों में ही गृसित रहना पड़ता है। अपने उद्दंड स्वभाव के कारण वह दवा भी नहीं खाता है और न किसी प्रकार का परहेज ही करता है इस कारण जन्म भर के लिये पिंड रोगी ही बन जाता है अपने इस उद्दंड स्वभाव के कारण अपने जीवन भर अन्य भी संसारके सब कामों में असफल ही रहता है और धक्के ही खाता है, यह ही अपना खोटा स्वभाव वह मरने के पीछे अपने साथ ले जाता है, इस ही कारण तो नित्य यह देखने में आता है

कि कोई गाय तो जन्म से ही ऐसी अलील होती है कि बच्चे भी उसकी पूंछ खैचने लग जाते हैं तो भी वह कुछ नहीं कहती है और कोई कोई गाय ऐसी भी हाती हैं जो घास डालने वाले और दाना खिलाने वाले पर भी मारने को आती है, दूर से ही सींग हिलाने लगजाती है, यही बात कुत्तों और अन्य पशु पत्तियोंमें भी देखी जाती है। मनुष्य भी भिन्न२ स्वभावके ही होते हैं, वे भी अपना भिन्न २ स्वभाव जन्म से ही अपने साथ लाते हैं,फिर अन्य कारणों के मिलने से स्वभाव में अदल बदल वा कमी वेशी भी होती रहती है।

अनेक ऐसे भी माँ बाप हैं जो अपने बच्चों को इस प्रकार सुधारते हैं जिस प्रकार चतुर चाबुक सवार घोड़े को सधाता है, वा जिस प्रकार कलन्दर रीछ और बन्दर को सधा लेता है, वह उनकी आज्ञापालन, दूरदर्शिता, आगा पीछा सोचना, प्रत्येक कार्य में आगे के नफे नुक़सान का खयाल रखना, आगामी के फ़ायदे के वास्ते इस समय की तकलीफ को सहन कर लेना, इच्छाओं को दबाना, विषयासक्त न होना, कषायों के वस में न रहना, एकदम न भड़क उठना, किन्तु विचार से काम लेना, हया शरम करना, दूसरों के हक़ का खयाल रखनो, बांट कर खाना, मुहब्बत और प्यार से रहना, आदि उत्तम २ बातें सिखा कर उनका ऐसा ही स्वभाव बनाते हैं, जिससे वह बचपन में भी आनन्द और प्रसन्न रहते हैं, आगामी जीवन में भी सफल होते हैं और सुख से आयु बिता जाते हैं। इस ही प्रकार की अन्य भी अनेक बातें देखमें आती हैं कि मनुष्य यदि अपनी किसी कषाय वा इच्छाको वार २ काम में लाता है. वार वार अपनी उस इच्छा वा कषाय के ही अनुसार करता है,तो फिर अपनी उस इच्छा कषायका ऐसा गुलाम बनजाता है, कि उसही का हो रहता है, जैसा कि विषय भोगोंमें रत होजाने से मनुष्य इनमें ऐसा फस जाता है कि अपना सब कुछ खोकर

भूखा कङ्काल तक होजाता है, अपनी शारीरिक शक्ति भी सब नष्ट करदेता है, इज्ज़त आवरू भी सब खो बैठता है, तो भी इन विषय-भोगो की आसक्तता को नही छोडता है। चोरी की भी इसी प्रकार ऐसी लपक पड़ जाती है कि बार बार कैद होने और कड़ी सज़ा पाने पर भी जब छूट कर आते है तो उस ही दम फिर चोरी को ही तरफ़ लगते हैं। कहावत भी प्रसिद्ध है कि कोई चोर चोरी छोड कर फकीर हो गया तो भी रात को उठ कर अपने साथियों के-फक़ीरों के-तू बे उठा कर इधर उधर रख दिया करता था। तब ही से यह कहावत चली आती है कि चोर चोरी से जाय पर हेरा फेरी से नही जाता। इस ही प्रकार स्वांग खेलने वाले वा शतरज चौपड़ और ताश गजफे की वाज़ी लगाने वाले धत्ती लोगों की वावत भी यही कहावत प्रसिद्ध है, किसी धत्ती खिलाड़ी का बेटा मर गया, वह उस समय खेल में लगा हुआ था, लोगों ने आकर कहा कि तेरा बेटा मर गया तो वह क्या कहता है कि, अच्छा अर्थी तो बांधो मैं भी अभी आता हूं, और जब अर्थी बध गई तो कहा कि शमसान मं तो ले चलो, मैं भी अभी आया। मान करने वालों की वावत भी प्रसिद्ध है कि रस्सी जल जाती है पर उसके वट नहीं जलते-अर्थात्, जिस धन सम्पत्ति वा हकूमत के कारण कोई मान करता था वह सब जाती रहने पर भी अकड़ नहीं जाती है, ऐठ रहना तो उसका एक प्रकार का स्वभाव हो जाता है। धोखा और फरेब के काम करते रहने से भी इस ही प्रकार के काम करने का स्वभाव हो जाता है, बिना चालाकी के तो कोई बात ही नहीं करता है, यदि खुद किसी को धोखा देने का मौक़ा नही होता तो दूसरों को ही धोखा फरेब करने की सलाह देने लगता है। बहुत दिनों तक किसी भारी रंज मे फंसे रहने वालोंकी बाबत भी देखा गया है कि वह मौक़ा बेमौक़ा सब जगह अपने रज को ही ले बैठते हैं, रस्ते चलते अनजानों के सामने भी अपना

दुखड़ा रोने लग जाते हैं। इस ही प्रकार जिसमें लोभ वढ़ जाता है, वह सब ही बातों में लालच तकने लगता है, अपना ऐतवार खो देने और ज़लील तथा ख्वार होने पर भी बाज़ नहीं आता है।

ग़रज़ जिस प्रकार शारीरिक काम करते रहने से शरीर के अङ्ग बलवान होते हैं, अधिक २ काम करने लग जाते हैं, इस ही प्रकार कषाय और इच्छायें भी वार वार करते रहने से बढ़ती है और बलवान होती हैं, अधिक अभ्यास होनेसे तो ऐसी पक्की हो जाती हैं कि मरते दमतक भीनहीं छूटती है—यहां तककि मरनेके बाद भी साथ जाती हैं। जिस प्रकार कोई भङ्गड़ व शरावी जितनी २ बार शराब पीता है उतनी ही उतनी उसकी आदत भंग वा शराब पीने की बढ़ती चली जाती है—यहां तक कि बढ़ते २ दो दो बोतल शराब से भी तृप्ति नहीं होती है और ऐसी वेवसी हो जाती है कि उसके कारण साक्षात तन्दुरुस्ती विगड़ती देख कर और अन्य भी सब ही कार्योंमें खराबी पड़ने लग जानेपर भी शराब का पीना नहीं छोड़ सक्ता है। शराब और अफीम के नशे वाजों को रोते देखा है कि किसी तरह हमारी यह आदत छूट जाय परन्तु नहीं छोड़ सके हैं। इसही प्रकार मान माया क्रोध लोभ आदि कषायें भी वार वार करते रहने से बढ़-ती हैं और अधिक बढ़ जाने पर जीव को ऐसा वेवस कर लेती हैं कि उनके कारण महादुखी तथा वेचैन रहने पर और लाख नुक़सान उठाने पर भी यह कषायें नही छूटती हैं, मरने के बाद भी साथ जाती हैं।

हम सातवें दिन कपड़े बदलते हैं, मैले कुचेले उतार डालते हैं और नये साफ सुथरे पहन लेते हैं। परन्तु जो मैले कपड़े उतारे गये हैं, क्या वे उसी दम मैले हुये हैं, जब कि वह उतार कर डाल दिये गये हैं, नहीं वह तो जिस दिन पहने गये थे और जिस समय पहने गये थे उस ही समय से मैले होने शुरू हो गये थे और हर दम ज्यादा ही ज्यादा मैले होते चले गये थे, परन्तु शुरू २ में उन

पर ऐसा हलका मैल चढ़ा था जो आंखों से दिखाई नहीं देता था, एक दो दिन पीछे ही उनका कुछ २ मैला होना जाहिर होने लगा था, फिर चढ़ते २ इतना मैल चढ़ गया कि उनको उतार कर दूसरे पहनना पड़ा। इस ही प्रकार वरस दो वरस में कपड़ा वोदा होकर फटने लग जाता है तव उसे उतार कर फेंक देना पडता है. वह भी उस ही दिन वोदा नहीं होगया है, जिस दिन उतार कर फेंक देना पड़ा है। वह तो जिस वक्तसे उसको पहनना शुरू किया था उस ही वक्त से घिसना और वोदा होना शुरू होगया था और क्षण क्षण वोदा होता जाता था। परन्तु शुरु २ में उसका वोदा होना हम को दिखाई नहीं देता था, जव वह ज्यादा ही वोदा हो गया तव ही उसका वोदापन हमको दिखाई दिया। इस ही प्रकार शरीर में भी प्रत्येक प्रकार का परिवर्तन-कमज़ोरी वा मजवूती-उसकी समय समय की छोटी वड़ी सव ही क्रियाओं से, समय २ वुरी भली हवा में सांस लेने से, सर्व प्रकार के खाने पीने से समय २ सर्दी गर्मी लगते रहने से, प्रत्येक समय की कषायों की भड़क और संसार के अन्य सव पदार्थों से सम्वध होते रहने से समय २ ही होता रहता है। परंतु अपनेशरीर का समय २ का छोटा २ परिवर्तन हम को दिखाई नहीं देता है, जव वह परिवर्तन होते २ बहुत मोटे और स्पष्ट हो जाता है तव ही मालूम होता है।

इस ही प्रकार जीव का वुरा भला स्वभाव भी उसके समय २ की इच्छाओं और कषायों से ही वनता और विगड़ता रहता है, जीव के स्वभाव का भी क्षण क्षण का वदलना मालूम नहीं होता है किन्तु जव विल्कुल ही मोटे रूप में कोई स्वभाव वन जाता है, तव ही मालूम होता है- क्षण २ में जीव के अन्दर इच्छायें और कषायें उठती रहती हैं, यह ही उसके कर्म हैं जो उसके स्वभाव को वनाते विगाड़ते रहते हैं। इस प्रकार अपने स्वभावके वनने विगड़-ने से ही जीव शांति वा अशांति, आराम वा तकलीफ, सुख वा

दुख पाता है, प्रत्येक कार्य में सफलता वा असफलता प्राप्त करता है। संसार के जीवों में इच्छाओं और कषायों की जो हल्की वा भारी तरङ्ग उठती रहती है, वह कभी तो मन में ही उठ कर रह जाती हैं, कभी मुख से वर्णन करके उनको ज़ाहिर भी कर दिया जाता है और कभी शरीर के द्वारा वैसी ही क्रिया भी की जाती है, मन वचन और कार्य इन तीनों ही तरीकों से कषाय की मन्दता वा तीव्रता के अनुसार हलका या भारी कर्म होता रहता है और जीव के स्वभाव पर उसका असर भी पड़ता ही रहता है। प्रत्येक कार्य तीन तरह सेहोता है, आप करने से, दूसरे के कराने से, वा करने वाले के प्रति प्रसन्नता प्रगट करने से। प्रत्येक इच्छा वा कषाय कभी तो मन में ही आकर रह जाती है. कभी उसका थोड़ा वहुत प्रवन्ध वांधना शुरू करके ही छोड़ दिया जाता है और कभी वह कार्य पूरा हो कर दिया जाता है। इस प्रकार अनेक भेदोभेद रूप ही यह कर्म होते हैं जो सव जीव के स्वभाव का ढांचा वनाते विगाड़ते रहते हैं।

अध्याय तीसरा

कर्मों का फल

किसी ने कोई ऐसी कड़ी चीज़ खाली जिसको वह हजम नहीं कर सक्ता है उससे उसके पेट में दर्द हो जाना, दस्त लग जाना, उवकाई वा कै आना, पेट का फूल जाना, शरीर का सुस्त पड़ जाना आंखों से पानी आना, सिर में दर्द होना, चक्कर आना, वेहोश

हो जाना, मुंह में छाले पड़ना, मुंह से पानी आना आदि तरह तरह शारीरिक कष्ट तो उसके निकट वर्ती फल हैं। इनके सिवाय, हकीम को बुलाना, उसको फीस देना, दवा मंगाना, बेकार होजाना उसके कार्यों में फ़रक़ आना, घर वालों का परेशान होना आदि दूर के फल हैं। जो उसके शरीर से बाहर असर करते हैं। इस ही प्रकार गुस्सा आने से बुद्धि और विचार का जाता रहना, अपने पराये का ख़याल न रहना, नुक़सान पहुंचाने का जोश आना, बे-चैन होना आदि वे फल हैं जो जीवके ही स्वभाव पर असर डाल-ने वाले है, ये निकटवर्ती फल हैं, इनके इलावा गुस्से के अधिक भड़क जाने से खून में जोश आजाना, शरीर का जलने लग जाना वा सूख जाना, आंखों में लाली का आना, बदन कांपने लग जाना अपने ही शरीर को नोचने लग जाना, सिर फोड़ लेना, अपने ही घर में आग लगा देना, दूसरों पर हमला करना, गाली देना, लाठी मारना, तलवार वा बन्दूक चलाना, फिर दूसरों से भी गाली खाना, लाठी वा जूते से पिटना, तलवार वा बन्दूक से मारा जाना, मुक़द्दमा होकर दंड पाना, सैकड़ों को अपना वैरी बना लेना, अपने कामों में हर्जा पड़ जाना, धन का नुकसान उठा-ना, लोगों में जलील होना ये सब दूर वर्ती फल हैं। इस ही प्रकार कामांध होकर अपने बुद्धिविचार को खो बैठना, काम वासना की भड़क का उठना बेचैन होना आदि फल तो उसके स्वभाव को बिगाड़ने वाले हैं, और निकट वर्ती हैं, और इस का मांधता से उस के शरीर पर, धन पर, कार व्यवहार पर, इज्जत आबरू पर, दूसरों से उसके सम्बन्ध पर और अन्य भी अनेक बातों पर जो असर पड़ता है, वह दूर वर्ती फल है। कोई भी कषाय हलकी हो वा भारी उसके भारी हल्के निकट वर्ती और दूरवर्ती फल जरूर होते हैं। हलकी और भारी होने के कारण इनके असंख्यात भेद हो सकते हैं किन्तु मोटे तौर पर निकट वर्ती और दूर वर्ती यह दो ही

भेद किये जा सकते हैं, एक जो जीव के स्वभाव को विगाड़ते हैं और दूसरे जो उसके जो बाह्य सामान पर असर डालते हैं।

हवा पानी और मिट्टी से वृक्ष जो खूराक हासिल करता हैं उस ही से उस वृक्ष की जड़ तना छाल टहनी पत्ते फूल फल आदि वनते रहते है, पत्ते में भी नस गूदा आदि कई प्रकार की वस्तु होती हैं, फूल में बाहर की डोडी, फूल की पत्ती इसके अन्दर की पराल आदि कई वस्तु होती है, फलमें भी छिलका गूदा औरवीज आदि कई वस्तुहोती हैं बीज मेंभी छिलका और अन्दर की गिरी आदि कई वस्तु हैं, परन्तु यह सब वस्तु वृक्ष की एक ही खूराक से वनती हैं और बढ़ती है वृक्ष जो भी खूराक हवा पानी और मिट्टी से लेता है वह खूराक इन सबही प्रकार की वस्तुओं में वटकर इन सबही प्रकारका रूप और स्वभाव ग्रहण करती रहती है, इस ही प्रकार मनुष्य के शरीर में भी आँख नाक कान दाँत दिल दिमाग जिगर आंत हाथ पांव खून हड्डी चर्वी आदि तरह तरह की वस्तु भरी पडी है, मनुष्य जो खूराक खाता पीता है उस ही से यह सब भिन्न २ प्रकार की चीजें वनती रहती हैं, एक ही खूराक इन सब ही चीजों के वनने में वटती रहती हैं, इस ही प्रकार जीव का प्रत्येक कर्म अर्थात् उसकी प्रत्येक कषाय भी फल देने के वास्ते अनेक रूपमें वट जाती है।

नशे की कोई चीज खालेने से कुछ क्षण तो उसको शरीर में भी प्रवेश करने में, घुल मिल जाने में लगते है, उस क्षण तक तो वह नशा कुछ असर नहीं करता, फिरअपनाअसर करना शुरु कर देता है और कुछ समय तक बराबर करना रहता है, नशियाला वनाये रखता हैं, फिर चाहे वह नशे की वस्तु शरीर के अन्दर रहे वा निकल जाय उसका असर जाता रहता है, इस ही प्रकार किसी औषधि के खाने से भी कुछ क्षण के पीछे ही वह अपना असर करना शुरू करती है और कुछ समय तक असर करती रहती है और

फिर उसका असर समाप्त हो जाता है, इस ही प्रकार अन्य भी जो वस्तु शरीर के अन्दर जाती है वह इस ही प्रकार असर देकर बे असर हो जाती है इस ही प्रकार प्रत्येक नवीन कर्मों को भी अर्थात् प्रत्येक कषाय को भी कुछ क्षण तो पुराने कर्मों के साथ घुलने मिलने में लगते हैं फिर वह अपना असर देने लगते हैं और कुछ समय तक असर देकर बेकार हो जाते हैं।

संसारी जीव हर वक्त ही इच्छाओं और कषाय में लिप्त रहते हैं इस कारण हलके वा भारी कर्म भी हर वक्त करते ही रहते हैं जो कुछ समय तक अपना असर दिखाकर बेकार होते रहा करते हैं एक समय में एक प्रकार की कषाय में जो कर्म बनेगा वह जितने समय तक अपना असर देता है उस समय के जितने क्षण हैं उतने ही भाग उस कर्म के होकर एक एक भाग एक एक क्षण में असर करने के लिए उदय में आता रहता है इस प्रकार एक एक क्षण में पिछले अनेक समयों के किये कर्मों के भाग उदय में आते रहते हैं, जैसा कि यदि एक समय के किये कर्म के फल देने का काल कम से कम एक मिनट मान लिया जावे और एक मिनट के ६० सैकन्ड होकर एक एक सैकन्ड को ही एक क्षण ठहरा लिया जावे तो जो कर्म अब से ५९ सैकन्ड हुवे हुआ था उसका भी एक भाग इस समय उदय में आ रहा है और जो कर्म ५८ सैकन्ड हुवे हुआ था उसका भी एक भाग उदय हो रहा है इस ही प्रकार जो कर्म ५७-५६-५५ सैकन्ड हुवे, यहां तक के जो कर्म एक सैकन्ड हुवे हुआ है, उन सब ही का एक एक क्षण उदय में आ रहा है, इस प्रकार भिन्न २ समयों में बंधते आये हुये कर्मों के भाग एक २ समय में फल देने के वास्ते उदय में आते रहते है, परन्तु जीव के प्रत्येक समयमें एक ही प्रकारकी कषाय उत्पन्न नहीं होती है, कभी हल्की होती है, और कभी तेज़ इस ही वास्ते भिन्न २ समयों में बंधे एक ही प्रकार के कर्मों के फल में भी बहुत फ़रक़ होता है, किसी

समय का बधा कर्म तीव्र फल देने वाला होता है और किसी समय का मन्द फल देने वाला, इस ही कारण अलग २ समय में बधे एक ही प्रकार के कर्मों के जो भिन्न २ प्रकार के अनेक भाग एक ही समय में उदय मे आते हैं वह सब मिल कर और एकमेक होकर ही एक समय में असर दे सक्ते हैं, उनमें कोई तो तेज़ असर देने वाला होता है और कोई हल्का यह सब मिलकर एक ही होजाते हैं और एक समय में एक ही प्रकार का फल देते हैं, जिस प्रकार यदि ५० औषधि मिलाकर कोई दवा बनाईजावे तो उसकी एक छोटीसी गोली मे भी पचासों औषधियोंका असर होगा, परन्तु वह पचासों औषधि अलग २ असर नहीं करेंगी किन्तु सब के गुण मिल कर कोई एक ही असर हो जावेगा, वह ही एक असर उस गोली का होगा वह छोटीसी गोली यदि मु हमें डाल ली जावे और घुल घुलकर क्षण क्षण में उसका रस पेटमें जाता रहे तो जितना उसका रस एक क्षणमे जावेगा इसमें भी पचासों औषधियों का अ श होगा परन्तु असर सब का मिल कर एक ही होगा, यह कथन तो एक ही प्रकार के हल्के भारी कर्मों के भिन्न २ अंशों का है जो एक ही समय में उदय में आते है, इस ही प्रकार भिन्न २ प्रकार के कर्म भी एक ही समय मे उदय म आते रहते है और उनका भी सम्मिलित एकही असर एक समय में होता है।

यदि हम कोई ऐसी कडी चीज़ खालें जो न पचने के कारण पेट में दर्द करने लगे तो उसके ऊपर कोई दूसरी ऐसी चीज खाई जा सक्ती है जो इसको हज़म करके शरीरमें पचादे और दर्दको भी हटा दे इस ही प्रकारअच्छी पुष्टी कारक खूराक के न मिलनेसे और बहुत दिनों तक बुखार आदि किसी बीमारीके रहनेसे खून कम हो जाता है वा खून का पानी हो जाता है, फिर लोहा आदि खून पैदा करने वाली औषधऔर पुष्टीकारक खूराकके खानेसे फिर खून बढ जाता है, वही खूनका पानी फिर लाल २ खून बनजाता है और शरीर भी सुर्ख होजाताहै, बलग़मकीअधिकता होजानेसे शरीरके अंशोंका भी बलग़म

बनने लगता है, शरीर के किसी अंग में कोई दोषी परमाणु इकट्ठा होजाने से फोडा हो जाता है और खून की पीप बनने लग जाती है, इसही प्रकार किसी वस्तुके खानेसे शरीरकी कोई धातु उपधातु अधिक जोर पकड जाती है, बहुत तेजी करने लग जाती है वा जमाव पकड जाती है, किसी वस्तु के खाने से वह वस्तु कमज़ोर भी हो जाती है और जल्दी ही निकल भी जाती है।

कर्मों में भी इस ही प्रकार का अलटन पलटन होता रहता हैं, कोई नवीन कर्म ऐसा भी हो सक्ता है जो पिछले कर्मों के मंद असर को तेज़ करदे वा तेज़ असर को हल्का करदें, उनके असरके काल को घटादे वा बढा दे, इस बात को अच्छी तरह समझाने के लिये यह दृष्टान्त दिया जा सक्ता है कि एक मनुष्य ने मन्दिर बनवाने और पूजा प्रतिष्ठादि कराने के वास्ते कुछ रुपया अपनी पूंजी में से अलग कर दिया, और ईंट पत्थर लोहा लकड़ी आदि बहुत कुछ सामान भी इकट्ठा कर लिया फिर किसी उपदेश में पाठशाला बनाने का बहुत पुन्य होना सुन कर उसका इरादा पाठशाला बनाने का हो गया, और वह सब रुपया और सब सामान उसने पाठशाला बनाने में लगाना शुरू कर दिया इस ही बीच में वह किसी वेश्या पर आसक्त हो गया और उस वेश्या नेउसको ऐसा मोहाकि पाठशाला बनाने के बदले वेश्या का ही मकान बना दिया, इस ही प्रकार कोई पुरुष जो अपने बाल बच्चों से बहुत प्यार करता था, जब वह घर आता था तो उसके सब बच्चे इसके शरीर को पिलच कर खूब दंगा करने लग जाते थे, और वह बहुतप्रसन्न होता था, वह एक दिन किसी के साथ लड़ कर बहुत ही ज्यादा क्रोध में भरा हुआ घर आया, उसके बच्चों ने नित्य के समान पिलच कर उससे दङ्गा करना चाहा परन्तु आज वह क्रोध में भरा हुआ था, इस कारण बच्चों का पिलचना और दङ्गा करना उसको बहुत ही बुरा मालूम हुआ, उसने उनको दङ्गा करने से मना किया और

धमकाया, बच्चों ने नहीं माना तो उसने उनको खूब मारा और उठा २ कर दूर फेंक दिया।

एक पुरुष ने किसी मत का खण्डन करने के लिये उसके अनेक धर्म ग्रन्थ इकट्ठे किये, उनको बहुत ही कोशिश से पढा और एक एक अक्षर को समझा इस ही बीच में उसही मत का एक ऐसा विद्वान उसको मिल गया जिसने इस धर्म के सारे ही सिद्धान्त सत्य सिद्ध करके उसके हृदय में बिठा दिये जिससे वह उस धर्म का ही पक्का श्रद्धानी और मानने वाला हो गया, और खूब ज़ोर शोर के साथ उस धर्म का प्रचार करने लग गया, इस ही प्रकार किसी धर्म का श्रद्धानी हो कर उसका प्रचार करने के लिये यदि कोई उस धर्म के अनेक शास्त्रों को इकट्ठा करे और पढ़ते २ उस ही को वह धर्म झूठा प्रतीत होने लग जावे तो उसका उस धर्म का सारा ज्ञान उसके खण्डन में ही काम आने लग जावेगा।

कोई धनवान किसी एक बदमाश से बहुत घृणा करता है, यहां तक कि उसको अपने गाँव से निकलवा देने वा पकड़वा कर कैद करा देने की कोशिश कर रहा है उस धनवान का एक बहुत बड़ा शक्तिशाली पुरुष वैरी है, जिससे वह धनवान बहुत घबराता है और उसका कुछ भी नहीं कर सक्ता है, अब यदि उस धनवान को यह मालूम हो जावे कि वह बदमाश उस शक्तिशाली मेरे वैरी का दुश्मन है और अभी हाल में ही उसको बेइज़्ज़त करने वाला है तो वह धनवान उस बदमाश से घृणा करने के स्थान में उससे प्यार करने लग जावेगा, उसकी सब प्रकार से सहायता करने को तैयार हो जावेगा और उसका हौसला बढ़ावेगा, इस ही प्रकार किसी धनवान का कोई ग़रीब बुढ्ढा पड़ौसी खौं खौं करके खांसता हुआ रात भर जागता है जिससे उस धनवान की नींद में बड़ी खराबी पड़ती है। वह धनवान उसको गालियां देता है और धमकाता है, वह बेचारा भी अपनी खाँसी रोकना चाहता है पर नहीं

रुकती है, इस वास्ते लाचार है, आखिर धनवान ने उसको अपने एड़ोस में से ही निकलवा देने का इरादा कर लिया है, इस ही बीच में धनवान को यह मालूम होगया कि तेरे मकान पर तो हर रोज़ चोर आते हैं, पर इस तेरे पड़ोसी को खांसता देख कर गालियां देते हुये वापिस चले जाते हैं और शीघ्र ही उसको खूब पीटने वाले हो रहे हैं। यह सुन कर वह धनवान अपने गरीब बुढ्डे पड़ोसी से प्यार करने लग जाता है, उसकी सहायता और रक्षा भी करता है, वह ही उसको खांसी जिसके कारण वह उससे नफ़-रत करता था अब उससे प्यार करने का कारण होगई है।

इन सब दृष्टान्तों से साफ साबित है कि हमारी कषाय बदल कर कुछ से कुछ होती रहती है हमारे मकान का वह छप्पर जो हमको धूप की गर्मी से बचाता है उस ही में यदि आग की ज़रासी चिंगारी पड़ जावे तो वह ही छप्पर आग बगूला होकर हम को और उस में रक्खे हुये हमारे सारे अस्बाब को जलाने लग जावेगा, इस ही प्रकार इस समय की किसी कषाय से पिछली कषाय भी बदल जा सकती है, उन कषायों से पैदा हुये कर्म भी कुछ से कुछ असर करने लग जाते हैं।

— —

चौथा अध्याय

निमित्त कारण

संसार में अनन्तानन्त वस्तु हैं और प्रत्येक वस्तु में अनन्तानन्त गुण हैं, जैसा कि एक ही प्रकार की मिट्टी में कुम्हार घड़ा मार

मटकना लोटा शकोरा चिलम और तरह २ के खिलौने बनाता है, अर्थात् मिट्टी में इस प्रकार अनेक रूप हो जाने का गुण है, रेत में यह गुण नहीं है इस कारण रेत से यह सब वस्तु कुम्हार नहीं बना सक्ता है मिट्टी भी धरती में पडी २ आप से आप यह रूप धारण नहीं कर लेती है इसको तो जब कुम्हार पानी में उसन कर चाक पर चढाता है, तब ही मिट्टी से इस प्रकार के खिलौने और वर्तन बनते हैं, इस प्रकार मिट्टी आदि जो वस्तु अनेक रूप धारण करती है वह उपादन कारण कहलाती है और कुम्हार और चाक आदि जिनके द्वारा वह यह रूप धारण करती है उसको निमित्त कारण कहते हैं, जङ्गल की मिट्टी में तरह तरह की वनस्पति के बीज मिले रहते हैं,मेह बरसने पर जब उन बीजोंको पानी का निमित्त मिलता है, और मौसम भी उनके अनुकूल होता है तो वह बीज फूट कर पौदा बनने लग जाते है, मिट्टी के परमाणुओं को भी अपनी खुराक बना कर पौदे के रूप में कर लेते है, जिस प्रकार का वह बीज होता है, मिट्टी भी उस ही प्रकार की वनस्पति रूप होजाती है, हवा भी तरह तरह के बीज इधर उधर से उडाल कर ज़मीन में डालती रहती है,मनुष्य भी तरहतरह के बीज ज़मीनमें बोता रहता है, वह मिट्टी इन सबही बीजों का निमित्त पाकर और उनको ख़ूराक बन कर तरह २ के पौदों के रूप में बदल जाती है यदि मिट्टी को इन बीजों का निमित्तन मिले तो वह हर्गिज़भी इन तरह २को वनस्पतियोंका रूप धारण करने की शक्ति न होती तो कोई भी निमित्त कारण उसको वनस्पति के रूप में नहो ला सकता था, इस ही प्रकार यदि बीज को हवा पानी मिट्टी और सर्दी गर्मी आदि का निमित्त उसके स्वभाव के अनुकूल नमिले तो वह भी पौदे का रूप धारण नहीं कर सकता है, प्रत्येक वस्तु को जब उसके स्वभाव के अनुसार निमित्त कारण मिलता है तब ही वह कुछ कार्य करता है, निमित्त मिले बिदून तो कोई भी वस्तु कुछ नहीं कर सक्ती है।

ससार में जो यह अनन्तानन्त जीव और अजीव भरे पडे हैं, वह सव ही अपना २ अलग २ स्वभाव रखते है और अपने २ स्वभाव के अनुसार ही काम करते हैं, परन्तु वह सव एक ही दुनियां में रहने और इस एक ही दुनियां में अपने २ स्वभावानुसार काम करते रहने के कारण एक दूसरे से मिलते और विछुड़ते हैं और इस प्रकार एक दूसरे के निमित्त कारण वनते रहते हैं, जैसा कि सूरज जमीन के सन्मुख है इस कारण उसकी धूप जमीन पर पडती है, जहां पानी भी है और खुशकी भी, पानी का यह स्वभाव है कि धूप को गर्मी पाकर भाप वनने लग जावे और ऊपर को चढ़ जावे इस कारण धूप का निमित्त पाकर समुद्र का वहुतसा पानी भाप वन कर ऊपर को चढ जाता है। फिर हवा का निमित्त पा कर वह ही भाप कही की कहीं चली जाती है और जहां ठड का निमित्त पाती है वहां फिर पानी वन जाती है और वह पानी हवा से वोझल होने के कारण नीचे गिर पड़ता है, इस ही को वारिश कहते हैं, पानी में ढाल की तरफ वहने का स्वभाव है इस कारण जिधर निवान मिलता है उधर ही को वह निकलता है और वहता वहता समुद्र तक भी जा पहुंचता है, जो पानी पहाड़ों पर वरसता है वह उनकी खोहों में घुसता चला जाता है और फिर वहां से रिस रिस कर निकलवा रहता है, इस ही से नदी नाले वहते रहते हैं, कुछ पानी जहां तक उसको जगह मिलती है धरती के अन्दर भी घुसा चला जाता वह ही कूवां का पानी होता है।

इस ही वारिश के पानी का निमित्त पाकर हजारों और लाखों तरह की वनस्पति जङ्गल में पैदा हो जाती हैं, नदी नालों का ढांग टूट कर गिर पड़ती है, पहाड़ के पत्थरों के नीचे की मिट्टी वहकर पहाड के पहाड़ गिर जाते हैं, मनुष्यों के वनाये मकानों में भी यह पानी जहां जगह पाता है घुसा चला जाता है, मकान के अन्दर भी टपकने लगता है, कड़ी तख्तों को गला देता है और कभी २

सारे मकान को गिरा देता है, इस ही प्रकार सूरज वा ज़मीन के घूमने से और दोनों के सन्मुख न होने से दिन रात होने हैं, उनके कभी नज़दीक होजाने और कभी दूर होजाने से दिन रात में फ़रक़ पड़ता रहता है, मौसमों का वदल होता रहता है,हवा भी कभी पर्वा चलती है कभी पछुवा,इसका भी कारण सूरज जमीन चांद गृह नक्षत्र और तारों का चक्कर और सर्दी और गर्मी आदि ही हैं।

ग़रज़ ससार में अनन्तानन्त वस्तु भरी रहने के कारण और स्वभाव उन सब ही का अलग २ प्रकार का होने के कारण वह सब एक दूसरी से मिल कर उनकी निमित्त कारण वनती रहती हैं और इस ही से तरह तरह के परिवर्तन अलटन पलटन होते रहते हैं, यह ही इस ससार का कारख़ाना है जो वस्तु स्वभाव पर ही चल रहा हैं।

जिस प्रकार वह अजीव पदार्थ अपने २ स्वभावानुसार संसार के इस कारख़ाने को चला रहा रहे हैं इस ही प्रकार ससार के सव जीव भी जैसा २ उनको निमित्त मिलता है अपने २ स्वभावानुसार इस कारखाने में काम करते रहते है। संसार के जीव अजीव कोई भी किसी के आधीन नहीं है, सब अपने २ स्वभाव के ही आधीन है, अपने २ स्वभाव के अनुसार निमित्त मिलने से वैसा ही कार्य करने लगते हैं निमित्त के वस होकर अपना स्वभाव नहीं छोड़ वैठते हैं. इस ही प्रकार निमित्त भी किसी के आधीन नहीं है, सूरज अपने ही स्वभाव के अनुसार तपता है और जो वस्तु उस के सामने आजाती है उस ही पर अपनी धुप डाल कर उसको भी तपाने लगता है, वह समुद्र के पानी के आधीन होकर इस कारण समुद्र पर धूप नही डालता है, कि उससे भाप वना कर वादल वनाऊ और पानी वरसाऊं, उसको इससे क्या ग़रज़, वह तो जव समुद्र उसके सामने होता है तो अपने स्वभावानुसार समुद्र पर धूप डालने लग जाता है और जब धरती वा पहाड़ वा जो

कुछ उसके सामने होजाता है उस पर अपनी धूप डालने लगता है, पानी का यह स्वभाव है कि धूप के पड़ने से वह भाप बनने लगता है, इस कारण जहां २ पानी होता है वही सूरज की धूप से भाप बनने लग जाती है, इस ही प्रकार हवा भी किसी के आधीन नहीं है जो भाप को उडा कर किसी खास जगह ले जावे वह तो अपने ही स्वभाव और निमित्त के अनुसार इधर या उधर चलती है. पानी की भाप हवा का निमित्त पाकर जिधर को हवा जा रही होती है उधर ही को उसके साथ उड़ी चली जाती है। इस ही प्रकार बारिश भी किसी के आधीन नही है कि जहां ज़रूरत हो वहीं बरसे, जहां भी भाप को ठंड मिल जाती है वहीं वह पानी बनकर बरस जाती है,इसही कारण समुद्र पर भी बरसती है और धरती पर भी, जगल में बरसती है और आबादी में भी यहाँ तक कि मकानों में भी और मकानों की छतों पर भी, जो चीज़ सूखनी डाल रक्खी है उस पर भी और जो कोई सफर कर रहा है उस पर भी, उसके बरसने से किसी को हानि है वा लाभ, कहां कहां उसके बरसने की जरूरत है और कहां नहीं इन सब बातों से उसको क्या मतलब, इस ही प्रकार बारिश का बर्सा हुआ पानी भी यह नहीं सोचता है कि जहां ज़रूरत हो वही वह कर पहुचू, वह तो जिधर को ढाल मिलता है उधर ही को वहा चला जाता है॥

इस ही प्रकार पानी का निमित्त पाकर मिट्टी में मिले हुवे तरह तरह की वनस्पति के बीज ऊग पड़ते हैं वह भी यह नहीं सोचते है कि कहां हमारे आने की ज़रूरत है और कहां नहीं, इस ही कारण मकानों की छतों पर दीवारों की रेखो में, मकानों के सहन में और गलियों में भी हरे हरेघास उग जाते है और लोगों के पैरों तले आ-कर कुचले जाते है, इस ही प्रकार पर्वा पछुवा और हल्की या तेज़

हवा भी किसी के हानि लाभ का खयाल करके नहीं चलती है, वह तो जैसा उसको निमित्त मिलता है उस ही रूप प्रवृत्ति करती रहती है ।

इस प्रकार ससार का यह सब ही कारखाना हानि लाभ का कुछ भी विचार न करके वस्तुओं के स्वभाव पर ही चल रहा है, तब ही तो जीवों में कुछ बुद्धि होने के कारण उनको अपने सुख के लिये अनेक प्रकार के उपाय करने पड़ते है, जो वस्तु लाभ दायक हैं उनको प्राप्त कर लेने और जो हानि कारक हों उनको दूर हटाने की कोशिश होती है, तब ही तो जंगल के सब पशु पक्षी दाना पानी की तलाश में इधर उधर भटकते फिरा करते हैं, कभी २ उनको कोसों दूर निकल जाना पडता है और एक जगल छोड़ कर किसी दूसरे ही जंगल में जा बसना होता है, यदि खाना पानी इन सब जीवों के भाग्य से ही पैदा हुवा करता वा कोई ससार का प्रबन्ध करने वाला इन ही के वास्ते पैदा किया करता, तब तो ख़ास उस ही जगह पैदा हुवा करता जहां यह जीव रहते हों, परन्तु यह वस्तुयें तो इन जीवों का कुछ भी ख़याल नहीं करती है, वह तो जहां कहीं उनको निमित्त मिलता है वहीं उगपड़ती है,वहां उनको भोगने वाले जीव रहते हैं वा नहीं इसकी तो कुछ भी परवाह नहीं होती है, पानी जहां गढ़ा मिलता है वहीं इकट्ठा हो जाता है, वह किसी की ज़रूरत वे जरूरत को नहीं देखता है, तब ही तो जीवों को अपनेभाग्यके भरोसे न रह कर तदबीर करनी पड़ती है. खुद चारा और पानी की खोज करनी होती है, जहां उनके चारे को उगने का निमित्त मिलता हो और पानी के इकट्ठा होने का ठिकाना हो वहीं ढूंढ भाल कर अपना वास बनाना होता है ।

मनुष्य भी ढूंढ भालकर वहीं जाकर बसता है जहां उसको दाने पानी का ठिकाना मिलता है, मनुष्य अधिक समझदार है और

वहुत वहुत तद्वीर और (उपाय) कर सक्ता है, इस वास्ते चारे के वास्ते स्थान २ घूमते फिरने की जगह उनके उगने के स्वभाव मालूम करके अपने ही स्थान पर उनको बोना शुरू कर दिया है, कूवे खोद कर पानी का भी वद्रोवस्त कर लिया है, यहां तक कि वडी २ नहरें निकालकर नदी के भी पानी को पचासों कोस दूरी से अपने खेतों तक खेंच लाये है, और खूव फ़राग़त से पानी देकर तरह तरह की चीजें पैदा करते है, उनके खेत में पानी न वरसे तो भी खूब पानी दे लेते हैं, अगर वारिश का पानी खेतों में ज़रूरत से ज्यादा भर जाता है तो निकाल देते हैं, अन्य भी अनेक तद्वीर करतं रहा करते हैं और नई से नई तद्वीर सोचते रहा करते है, अव्वल अव्वल जव इनको कूवा गलाने की और डोल से पानी खींचने की तद्वीर नही सूझी थी तव तालाव वा वावड़ी आदि ही वनाते थे, सीढियों के द्वारा नीचे उतर कर ही पानी भरकर लाते थे पर अव तो कू वे गला कर ऊपर से ही खड़े २ पानी खींचते हैं, इससे भी वढ़ कर पम्प चलाये है, जो घर घर लगने लग गये है, और तीन२ मजिल ऊपर तक पानी पहुचाते हैं आगे को इससे भी आसान कोई तद्वीर निकालने की कोशिश हो रही है, इस ही प्रकार मनुष्य धूप और वारिश से वचने के वास्ते मकान वना कर रहने लगा है, उसमें भी अपनी इच्छा के अनुसार हवा और रोशनी आती रहने के वास्ते उपाय वनाता है, गन्दा पानी निकल जाने के वास्ते नाली और परनाले लगाता हैं, सर्दी से वचने के वास्ते जाड़ों में अ गीठी जलाता है, गर्मियों में खस की टट्टी और पखे लगाता है, रात को प्रकृति तो अंधेरा करती है और मनुष्य अपनी तद्वीर से चराग़ जला कर उजाला कर लेता है, अव कुछ दिनों से मिट्टी का तेल खोद लाकर और कांच की चिमनी वना कर लैम्प जलाने लगा है जिसकी रोशनी चराग़ से भी कई गुणा ज्यादा होती है। फिर गैस की रोशनी वनाई है जो लैम्प की रोशनी को भी मात

करती है फिर इससे भी वढ़िया विजली की रोशनी चलाई है जो मानो रात को दिन ही कर दिखाती है, इस पर भी मनुष्य चुप नही वैठा है, वरावर सोचता ही रहता है और इससे भी वढ़िया तद्वीर निकालने वाला है ।

इस ही प्रकार शरीर की रक्षा के वास्ते भी मनुष्य ने तरह तरह के कपड़े वनाये है, अपनी वुद्धि से वड़ी २ कलें वना कर वहुत ही सुन्दर सस्ते और हजारों लाखों प्रकार के कपडे तैय्यार करने लग गया है, और नई से नई तर्ज के वनाने की कोशिश कर रहा है, इस ही प्रकार अन्य भी तरह तरह के सामान अपने आरोम के अपनी तद्वीर से वनाता चला जा रहा है और यह सव सामान ससार की वस्तुओं के स्वभाव को मालूम कर करके ही वना रहा है, अर्थात् अपने अनुकूल निमित्त मिला रहा है, परन्तु मनुष्य सारे ससार को अपने कावू में नहीं कर सकता है, सव ही को अपने अनुकूल नहीं चला सक्ता है, सव ही से वचने की तद्वीर नहीं कर सक्ता है इस ही कारण हर वक्त इसका सम्बन्ध हज़ारों ऐसी वस्तुओं से भी पडता रहता है जो न तो इसकी अपनी तद्वीर से ही मिलती है और न तक़दीर से ही गर्मी में एक मुसाफ़िर सफर कर रहा है और चाहता है कि वादल हो जायें जिससे धूप में न जलना पड़े, दूसरे किसी मनुष्य ने धूप में कोई ऐसी वस्तु सुखनी डाल रक्खी हैं जो यदि आज न सूखी तो खराव हो जायगी, वह चाहता है कि खूव कड़ाके की धूप पड़े इस ही प्रकार दुनियां के सव ही मनुष्य अपनी २ ग़रज़ के अनुसार कोई धूप और कोई वादल चाहते हैं परन्तु धूप तो इनकी इच्छा के अनुसार नही निकलती है और न इन लाखों करोड़ों मनुष्यों की भिन्न २ इच्छाओं और तरह तरह के भाग्य के अनुसार धूप और वादल हो ही सकते हैं, धूप वा वादल तो अपने ही स्वभावानुसार होते है और सव ही को भुगतने पड़ते है ।

इस ही प्रकार कोई चाहता है कि बहुत देर तक दिन रहे अभी रात न होने पाये, दूसरा कोई चाहता है कि जल्दी रात हो जावे और बहुत देर तक रात ही रात रहे, सुबह हो न होने पावे, परन्तु रात का होना न होना तो किसी की इच्छा वा भाग्य पर नही है, वह तो सूरज और धरती की चाल से अपने बधे हिसाब के अनुसार ही होते है तब ही तो जानकार लोग यह बता देते है कि अमुक स्थान पर अमुक दिन इतनी देर बाद शाम होगी और इतनी देरबादसुबह होगी अर्थात् दिन कितना होगा और रात कितनी, दिन मानकितना होगी और रात्रि मान कितना, इसही प्रकार किसी को पर्वा और किसी को पछवा हवा अनुकूल है, कोई तेज़ हवा चाहता है और कोई मद किसी को गर्म हवा पसन्द है और किसी को ठण्डी, परन्तु हवा तो किसी की इच्छा के अनुसार नही चलती है और न किसी के भाग्य के ही अनुसार चलती है, चले भी तो किस के भाग्य के अनुसार चले और किसके नही वह तो अपने ही स्वभाव के अनुसार चलती है और जैसी चलती है वह सब ही को भुगतनी पडती है, यह ही दशा वारिश की है, कोई चाहता है कि वारिश हो, कोई चाहता है न हो, कोई चाहता है हल्की हो और कोई चाहता है कि सिर्फबूदा बांदी हो और कोई चाहता है कि खूब हो जिससे जलथल सब एक होजाय, वह भी किसी की इच्छा वा भाग्य के अनुसार नहीं बरसती है किन्तु अपने स्वभाव के अनु सार ही कार्य करती है, और सब ही को भुगतनी पड़ती है, इसही प्रकार अन्य भी हज़ारों कार्य हैं जो अपने २ स्वभाव के अनुसार होते रहते हैं और सब ही को भुगतने पड़ते है।

जीव भी अपने २ स्वभाव और इच्छा के अनुसार कार्य करते रहते हैं जो किसी दूसरे जीवों के भाग्य वा कर्मों के आधीन होकर यह क्रियायें नहीं करते है किन्तु अपने ही स्वभाव के अनुसार करते है परन्तु उनकी क्रियाओं का सम्बन्ध दूसरे जीवों से भी हो

जाता है और उनको भुगतना पडता है हमारा कोई पडौसी यदि अपने घर मे अग्रगन्ध जलाता है, गूगल की धूनी देता है, गुलाव केवड़े का छिडकाव करता है, इतर लगाता है या घर मे गन्दगी जमा करता है तो उससे हवा में सुगन्धी वा दुर्गन्धी फैलती है उसका असर हम को भी जरूर होता है, हम को भी वह सुगन्धी वा दुर्गन्धी सूंघनी पड़ती है, पड़ोस में किसी के यहा विवाह है, रात भर रत जगा होता है और खूब गाना वजाना होता है जिससे हमारी नींद में फरक आता है, इस ही तरह पडौस में कोई जवान मौत हो गई है जिससे रात दिन रोना पीटना रहता है, इस रोने पीटने का दुख भी हम को अवश्य उठाना पड़ता है, किसी ने नगर में वडी भारी ज्योनार की, झूठी पत्तल के ढेर लग गये और उन को खाने के वास्ते हजारों चील इधर उधर कव्वे मडलाने लग गये, उनकी कांय २ भी हमको सुननी पड़ती है; और दिक्कत भी उठानी होती है, उस दिन जौनार करने वाले ने सारा ही घी दूध और सब्जी खरीद ली ईससे उस दिन किसी को भी वाज़ार से घी दूध वा सब्जी न मिल सकी, आज वाज़ार में सेठ जी की वारात का जलूस निकल रहा है जिससे रास्ता चलना भी कठिन हो गया है, वाजार से गुजरने के लिये हमको भी कुछ देर ठहरना पड़ गया है, आज कोई वडा आदमी मर गया है जिससे वाज़ार वन्द हो गया है और किसी को भी कुछ सोदा नहीं मिल सका है कि:—

किसी दूसरे देश में वड़ा भारी दुष्काल (अकाल) पड़ गया है, सब अनाज वहीं को खिंचा चला जा रहा है जिससे यहां भी वहुत तेज़ हो गयो है, हम को भी महगा ही मिला है किसी दूर देश में भारी युद्ध छिड़ जाने के कारण वहां की वस्तु आनी वन्द होगई है जिसका भी दुख हम को उठाना पड़ रहा है, हमारा पानी भरने वाला आज वीमार पड़ गया है इस कारण हमने आप ही थोडा

वहुत पानी लाकर गुजारा किया है, आज लाट साहेव के आने के कारण सारे भङ्गी वेगार में पकड़े गये है, इस कारण हमारा पाख़ाना पड़ा सड़ रहा है, इस ही प्रकार लाखों करोड़ों वाते प्रतिदिन होती रहती हैं जो भुगतनी पडती हैं, सारी दुनियां हमारी ही तकदीर के अनुसार नही चल रही है, न दुनियां के लोगों की ज़िन्दगी मौत शादी ग़मी हमारी तक़दीर के आधीन हो सक्ती है, यह सव मामले तो दुनियां के लोगों की अपनी २ तक़दीर और तदवीर से होते रहने हैं, पर हम भी इस ही दुनियां में रहते हैं जिसमें वह अपने २ कार्य करते हैं इस कारण हम तक भी उनके कार्यों का असर पहुंच जाता है उनके कार्य भी हमारे निमित्त कारण वनते रहा करते हैं ।

जिस प्रकार प्राकृत्तिक आपत्तियों से वचने के वास्ते मनुष्य तरह २ की तदवीर करता है, धूप और वारिश से वचने के वास्ते मकान वनाता, वाहर जाता है तो छतरी लगाता है, इस ही प्रकार जीवों की की हुई आपत्तियों से वचने के वास्ते भी उसको वहुत कुछ तदवीर करनी पड़ती है, मच्छरों से वचने के वास्ते मच्छर-दानी लगाता है या वदन को कपड़ा लपेट कर सोता है, मक्खियों से वचने को किवाड़ वन्द करता है पर्दा डालता है या चिक टांगता है, खाने को मक्खियों से वचाने के वास्ते किसी वर्तन में वन्द करता है या जालीदार सन्दूक में रखता है, कीडियों से वचा-ने के वास्ते मिठाई के वर्तन का मु ह कपड़े से खूव मजवूती के साथ वांधे रखता हैं, इस ही प्रकार कुत्ता विल्ली चूहा वन्दर चि-ड़िया कव्वा और चील आदि जीवों से भी पूरी २ रक्षा करता है। तव कहीं घर की चीजें वची रहती हैं, यह सव लाखों करोड़ों जीव भी हमारी तक़दीर के खैंचे हो संसार में विचरते नही फिरते हैं, वह तो अपने स्वभाव के अनुसार ही अपनी खूराक की ताक में फिरा करने हैं, जहां मौका पाते हैं वही से उटा लेजाते हैं, अगर

हमारी तकदीर ही हम को नुकसान पहुचाने के वास्ते इन जीवों को खैंच लाती है तबतो लाचार ही यह मानना पड़ गया है कि एक जीव की तक़दीर अपना लिखा पूरा करने वास्ते दूसरे अनेक जीवों पर ज़बरदस्ती करती है, जबरदस्ती ही उनसे अनेक कार्यकराती है, यदि चोर हमारी क़िस्मत से ही हमारा माल चुराने आता है तब तो चोर बेचारे का तो कुछ भी क़सूर नहीं है, उसको तो हमारी किस्मत ही चोरी करने के वास्ते खींच कर लाई है, आज हमारी क़िस्मत खींच कर लाई है, कल किसी दूसरे की और परसों किसी तीसरे की, ग़रज जिस दिन से वह चोरी कर रहा है उस को तो किसी न किसी की क़िस्मत ही चोरी के वास्ते खींच कर ले जाती रही है और जब तक लोगों की क़िस्मत उस पर वह ज़बरदस्ती करती रहेगी, उसको चोरी करने के वास्ते खींच लाती रहेगी तब तक तो उस बेचारे को चोरी करनी ही पडेगी, इस ही प्रकार किसी ने किसी को गाली दी वा थप्पड़ मारा तो यह कार्य भी अगर गाली सुनने वाले वा थप्पड़ खाने वाले की क़िस्मत ने ही कराया है, तब तो ससार में जो भी जुलम ज़बरदस्ती होती है उन सब में ही जुलम ज़बरदस्ती करने वाले पर तो कुछ भी दोष नही रहता है, जिस पर जुलम वा जबरदस्ती की गई है यह सब उपद्रव तो उस ही की क़िस्मत ने दूसरों के हाथों कराया है, इस कारण तब तो ससार में कोई किसी भारी से भारी अपराध का भी अपराधी नही रहता हैं न कोई पापी ही माना जा सक्ता है और न कोई जुलम ज़बरदस्ती करनेसे रोका ही जा सकता है क्योंकि वह तो जो कुछ जुलम ज़बरदस्ती करता है वह उस हीकी तक़दीर का खेंचा हुआ ही तो कर रहा है जिसपर वह जुलम वा ज़बरदस्ती कर रहा है, दूसरों की किस्मत से बेबस हो कर ही तो उसको यहसब कुछ करना पड़रहाहै,इस प्रकार असलमें तो वह जुलमज्यादती नहीं कर रहा है

किन्तु दूसरे पुरुष की किस्मत ही उस पर जवरदस्ती करके उससे यह जुल्म ज्यादती करा रही है,इस तरह दूसरे जीवों की तकदीर की जवरदस्ती मानने से तो विलकुल ही उलट फेर हो जाता है, और जुल्म जवरदस्ती करने वालोंकी हीजवरस्ती माननेसे सव वात ठीक वैठती है, इस वात पर कोई कोई ऐसा कहने लग जाते हैं कि चोर की तक़दीर में चोरी करना और धनी की तक़दीर में माल चोरी जाना लिखा था तव ही तो चोरी हुई, अर्थात् धनी की तक़दीर चोर को वुला कर नही लाई किन्तु चोर की तक़दीर ने तो चोर को चोरी करने के वास्ते भेजा और धनी की किस्मत में माल चोरी जाना था इस कारण चोरी गया, परन्तु ऐसा कहने वालों को यह भी विचारना चाहिये कि यदि किसी दिन धनो की किस्मत में तो माल चोरी जाना हो, और चोरों की क़िस्मत में उस दिन चोरी के लिये जाना वा माल मिलना न हो, अर्थात् यदि किसी दिन दोनोंकी किस्मतका मेल न मिले ता क्या हो,तव तो लाचार यातोधनी की क़िस्मत उस समय तक वेकार रहेगी जव तक चोरों की किस्मत में चोरी का लगना और उतना ही और वैसा ही माल मिलना न होगा जैसा उस धनी की क़िस्मत में चोरी जाना है, जव कभी विल्कुल ज्यों का त्यों ऐसा मेल मिलेगा तव ही उसके यहां चोरी हो सकेगी, जव तक ऐसा मेल नहीं मिलेगा तव तक तो धनी की क़िस्मत वेकार ही रहैगी, क़िस्मत में चोरी होना होते हुये भी चोरी न होगी और सम्भव है कि उसकी ज़िन्दगी में कभी भी ऐसा मेल न मिले और उसकी किस्मत विल्कुल ही वेकार जाय, और यदि ऐसा नहीं होगा अर्थात् धनी की तकदीर ज़रूर पूरी होगी अवश्य ही उसका माल चोरी जायगा तो चोरों की तकदीर में चोरी लगना हो या न हो तो भी चोरी का लगना ज़रूर मानना पड़ेगा, उस माल का मिलना उनकी तकदीर में हो या न हो तो भी वह माल उनको जरूर मिल जायगा, गरज दोनों की तकदीर

का मेल न मिलने पर किसी न किसी तक़दीर के विरुद्ध तो ज़रूर होगा ही, सब ही मामलों में ज्यों का त्यों मेल मिलते रहना, कभी भी मेल खाने से न चूकना यह नियम रूप हो नहीं सक्ता है, कभी मेल मिल भी सकेगा और कभी नहीं भी, और जब नहीं मिलेगा तब क्या होगा इसका कुछ भी उत्तर नहीं हो सक्ता है, बात वास्तव में यह ही है और घूम फिर कर यह ही माननी पड़ती है कि जीव वा अजीव संसार की सब ही वस्तु कोई भी किसी जीव की किस्मत वा भाग्य वा उसके पिछले कर्मों के आधीन नहीं है, सब अपने ही अपने स्वभाव के अनुसार क्रिया कर रही हैं, इस प्रकार आप अपनी २ क्रिया करते हुवे ही अचानक आपस में एक दूसरे से मिलना विछुड़ना होता रहता है, जिससे वह उसका निमित्त कारण बन जाती है और वह उसका. यदि आपस में एक दूसरी वस्तुओं का इस प्रकार मिलना विछुड़ना और निमित्त कारण बन जाना अचानक न माना जावे किन्तु तक़दीर का लिखा पूरा होने के वास्ते ही ऐसा होना निश्चित रूप माना जावे तब तो कोई भी किसी प्रकार की तदबीर नहीं की जा सक्ती है, बुरा या भला जो कुछ हमारी तक़दीर के अनुसार हमको मिलना वा विछुड़ना होगा वह ही होगा, तब हमारा किया क्या हो सकेगा तब तो तदबीर बिलकुल ही उठ जाती है, बस एक होनहार ही रह जाती है, और जब सब कुछ होनहार से ही होता है हमारे किये कुछ नहीं होता है तो कोई भी कर्म हमारा नहीं रह जाता है जिसके हम ज़िम्मेदार बनाये जावें और फल पावें।

चोर अचानक हमारे यहां चोरी करने आता है तब ही तो हम चोर से अपने माल को बचाने की कोशिश करते हैं छिपा कर रखते हैं और पहरा बिठाते हैं, यदि हमारे माल का चोरी जाना हमारी क़िस्मत के अनुसार निश्चित है तब तो हम को कुछ भी रक्षा करने की ज़रूरत नहीं है यह ही बात हमारी सब ही तदबीरों

कोशिशों और क्रियाओं पर लागू हो सक्ती है, तव तो मानो हमारा सारा ही खेल विगड जाता है और हाथ पर हाथ धर कर वैठ जाना होता है, तव तो जो अन्य कर्म है, कुछ नहीं करते हैं, वह कुछ भी दोपी नहीं ठहरते है किन्तु वह ही पागल ठहरते हैं, जो व्यर्थ ही तरह तरह के उपाय करने में लगते हैं परन्तु यह वात तो कोई भी मानने को तैयार नहीं होता है, कोई भी तद्वीर और उपाय को त्याग देने को तैयार नहीं हो सक्ता है, तद्वीर तो ज़रूरी ही मानी जाती है, और की भी जाती है।

परन्तु अव प्रश्न यह पैदा होता है कि अगर हमारी तद्वीरसे और इन सव अचानक मिल जाने वालेनिमित्त कारणोंसे ही सव कछ हो जाता है तो फिर क़िस्मत वा तक़दीर वा कर्म क्या करते है। उत्तर इसका यह है कि जैसा कि हम इस ही पुस्तक में पहले वर्णन कर चुके है कि कर्मोंसे जीव में एक प्रकार का वुरा वा भला स्वभाव पैदा हो जाता है कर्मों की उत्पत्ति मान माया लोभ क्रोध आदि कपायों से होती है जिस प्रकार को कपाय जीव में उत्पन्न होती रहती हैं वैसा ही उसका स्वभाव वन जाता है, यह ही उसका कर्म वन्धन है जो उसको सुखदाई वा दुखदाई होता रहता है, वीज से ही वृक्ष वनता है विना वीज के वृक्ष उत्पन्न नहीं हो सकता है, परन्तु वीज से भी हवा पानी मिट्टी आदि का निमित्त मिले विना वृक्ष उत्पन्न नहीं हो सक्ता है, वा यों भी कह सकते है कि वीज के निमित्त से हवा पानी और मिट्टी वृक्ष का रूप धारण कर लेती हैं, पर मुख्य वीज ही माना जाता है, एक ही खेत में एक ही प्रकार की मिट्टी और हवा पानी होते हुये भी जैसा वीज होता है वैसा ही वृक्ष उस हवा पानी और मिट्टी से वन जाता है, यद्यपि हवा पानी और मिट्टीके निमित्त के विना वीजसे वृक्ष नहीं वन सकता है परन्तु निमित्त मिलने पर वृक्ष के वननेका असल कारण तो वह वीज ही होता है अमरूद का वीज ही हवा

पानी और मिट्टी को अमरूद के वृक्ष के रूप में बदल देता है लेमूं का बीज ही लेमूं का वृक्ष उत्पन्न करता है, अन्य भी सब वृक्ष अपने २ बीज से ही बनते है, वृक्ष के बनने में असली कारण तो बीज ही है, इस ही प्रकार सुख दुख के मिलने में भी असली कारण तो जीव का भाव वा उस समय की उसकी कषाय ही होती है, बाकी सब सामान तो निमित्त मात्र ही होता है, तब ही तो एक ही प्रकार के बाह्य सामान से भिन्न २ प्रकार की कषाय रखने वाले पुरुषों को भिन्न २ प्रकार का सुख दुख हुवा करता है, कामी पुरुष को किसी सुन्दर वेश्या के देखने से जो खुशी होती है वह एक ब्रह्मचारी को नही हो सक्ती है, क्रोधी स्वभाव वाले को बात बात में क्रोध आता है, परन्तु प्रसन्न चित्त पुरुष उन ही बातों में अपनी प्रसन्नता पैदा कर लेता है, लड़ाका आदमी जिन लोगों से लड़ कर उनको अपना वैरी बना लेता है और दुख उठाता है, मिलनसार आदमी उनही को अपना बना कर सुख पाता है, घमंडी और मानी जिन लोगों में रह कर उनसे मेल मिलाप नही कर सक्ता है, अपनी ही अकड़ में रह कर दुख उठाता है, नम्र और निर् अभिमानी उनही लोगों को अपना बना कर सुख पाता है अधिक लोभी को ज़रा ज़रा से नुकसान से जो दुख होता है वह निर्लोभी को बहुत बड़े नुकसान से भी नही होता है, अधिक लोभी लोगों में अपना विश्वास खोकर नुकसान उठाता है, और कम लोभी अपना एतबार जमा कर सब कुछ कर लेता है, इस प्रकार संसार में जितने भी आदमी है सब के स्वभाव अलग २ हैं, सब अपने २ स्वभाव के अनुसार ही दुख सुख उठाते हैं, बाहरी सामान तो सब निमित्त मात्र ही हैं, तब ही तो एक ही प्रकार का बाहरी सामान भिन्न २ पुरुषों को उनके भिन्न २ स्वभाव और कषाय के अनुसार भिन्न २ फल देता है।

एकमनुष्य १०० रुपया महीना कमाता है, उसको यदि २०० रुपये महीना मिलने लग जावे तो बहुत खुश होता है, परन्तु दूसरा मनुष्य जो ५०० रुपया महीना कमाता है यदि उसको भी २०० रुपया महीना मिलने लगे तो वह बहुत दुखी होता है, रुपया तो दोनों को ही दो दोसौ मिलने लगा है परन्तु इससे एक तो बहुत सुखी हो रहा है और दूसरा बहुत दुखी, कारण यह है कि सुख दुख उन रुपयों में नहीं है, वह तो इस ही प्रकार निमित्त कारण हैं जिस तरह एक ही प्रकार की हवा पानी और मिट्टी भिन्न २ प्रकार के बीजों का निमित्त बन कर खट्टा मीठा कड़वा वृक्ष उत्पन्न करती हैं, इस ही प्रकार वह दोसौ रुपये भी अनेक प्रकार की इच्छा रखने वाले पुरुषों का निमित्त कारण बन कर किसी को सुख और किसी को दुख पहुंचाते हैं, देहली के एक सेठ की दस लाख रूपये की रूई करांची के एक गोदाम में पड़ी थी जो आग लग कर जल गई, सेठ ने जब समाचार पत्रों में खबर पढ़ा तो उसको बडा दुख हुवा थोड़ी देर में करांची से मुनीम का तार आया कि वह रूई तो किसी दूसरे को बेच दी गई थी इस कारण तुम को कुछ नुकसान नहीं, इससे सेठ का सब दुख दूर हो गया, इस रूई के जलने की खबर तो समाचार पत्रों से मालूम हुई और तार से भी परन्तु एक खबर से दुख हुआ और दूसरी से दुख दूर हुवा।

जिनके यहां विवाह कार्य फैलता है वह दिन रात काम करते हैं उनको न ठीक तरह सोना मिलता है और न वक्त परखाना, सर्दी गर्मी भी बहुत कुछ सहनी होती है, बारात दूर जाती है तो सफ़र के भी अनेक कष्ट सहने होते हैं, परन्तु इन सब कष्टों में उनको प्रसन्नता ही होती है, क्यों कि अपने इच्छित कार्य के वास्ते ही यह सब कष्ट उठा रहे हैं, यदि इच्छा के विरुद्ध किसी कार्य के लिये इससे आधा भी कष्ट उठाना पडे, तो बहुत ही ज्यादा दुख मालूम होने लगे, लड़का पैदा होने पर बच्चा जनने का सारा दुख सुख

ही मालूम होने लगता है इतना भारी कष्ट होने पर भी हृदय में प्रसन्नता होती है, इससे साफ़ सिद्ध है कि जीवों के कर्मों से बना हुवा उनके अन्दर का भाव ही उनको सुख दुख का देने वाला होता है, ससार में प्रत्येक जीव भला बुरा जो कुछ भी कार्य कर रहा है, जो कुछ भी भाग दौड़ करता है वह सब अपने अन्दर के भावों, अपनी इच्छाओं और कषायों के ही कारण तो कर रहा है, प्रत्येक जीव के अतरंग भाव, उनकी इच्छायें और कषायें भिन्न २ प्रकार की होने से हरएक की समझ बूझ प्रीति अप्रीति फुर्ती सुस्ती गर्मी नर्मी आदि सब बाते भिन्न २ प्रकार की ही होती हैं, इस ही से उन सबके कार्य भी भिन्न २ प्रकारके ही होते हैं,इस प्रकार जीव के कर्म तो जीव के सुख दुख के वास्ते ऐसे ही हैं जैसा कि वृक्ष के वास्ते बीज।

जैसा बीज होता है वैसा ही वृक्ष उत्पन्न होता है, वैसे ही उसपर फूल पत्ते और फल आते हैं, इस ही प्रकार जैसे २ जीव के कर्म होते हैं वैसा ही वैसा उसका अन्तरग भाव बनता है, वैसी ही कषाय उत्पन्न होती है और उस ही के अनुसार सब व्यवहार चलता है, परन्तु जिस प्रकार बीज को वृक्ष बनने के वास्ते मिट्टी हवा पानी आदि निमित्त कारणों की जरूरत होती है इनके बिना वृक्ष उत्पन्न नहीं हो सक्ता है और न फूल पत्ते वा फल ही लग सक्ते हैं इस ही प्रकार कर्मों को भी उदय होने के लिये निमित्त कारणों की ज़रूरत होती है वह भी निमित्त के मिलने से ही अपना कार्य कर सक्ते हैं, उसके बिना तो कुछ भी नहीं कर सकते हैं, जीव के कर्म तो उसका एक प्रकार का अ तरग भाव बना देते हैं परन्तु अपने उन अ ंतरग भावों के अनुसार व्यवहार वह तब ही कर सकता है जब उसकी उस भाव के अनुकूल सामान मिल जाता है, जिस प्रकार मिट्टी पानी और हवा आदि अनुकूल न मिलने से वृक्षों के लाखों करोड़ों बीज यों ही गल सड़ जाते हैं, वृक्ष उत्पन्न

नही कर सक्ते है, इस ही प्रकार अपने अनुकूल सामान न मिलने से जीव के भाव उसकी इच्छायें और कषायें भी यों ही रह जाती है।

किसी को काम भोग की इच्छा है, किसी को मिठाई खाने का शौक़ है, कोई नमकीन खाना चाहता है, कोई चरपरी ही पसन्द करता है, किसी को खटाई ही अच्छी लगती है,कोई शरावी है कोई भगड़ है, कोई अफ़ीमी है, कोई चरसी है, कोई गाना सुनने का शौकीन है,किसी को घोड़ेकी सवारी करने से प्रसन्नता होती है, कोई रंगारग के फूलों की वहार देखना चाहता है, कोई किसी प्रकार का कपडा पसन्द करता है और कोई किसी प्रकार का, और कोई किसी प्रकार की आजीविका करना चाहता है और कोई दूसरे प्रकार की, कोई सन्तान चाहता है और कोई शान शौकत पर ही मरता है, कोई लड़ना चाहता है और कोई सलूक पसद करता है, कोई एक प्रकार का हुनर सीखना चाहता है और कोई दूसरे प्रकार का, कोई कुछ भी हुनर सीखना नहीं चाहता है, हुनर सीखने को वड़ी भारी झंझट समझता है, कोई धन कमाने का इच्छुक है, किसी को सुस्त पड़ा रहना ही पसन्द है. कोई दूसरों को लूटने खसोटने का ही मत्ती है किसी को दूसरों की सेवा करना ही पसन्द है, ग़रज़ प्रत्येक जीव अलग २ प्रकार की इच्छा और अलग ही तरह की कपाय रखता है और सब ही के पूरा होने के वास्ते वाह्य सामान की अर्थात् निमित्त कारणों की ज़रूरत है।

परन्तु यह वात हम पहले ही सिद्ध कर चुके हैं कि जीव हो या अजीव संसार का कोई भी पदार्थ किसी जीव के कर्मों के आधीन नहीं है, दुनियामें जो अनन्तानन्त वस्तु भरी पड़ी हैं वह सब अपने ही अपने स्वभाव के अनुसार काम कर रही हैं, इस प्रकार काम करते हुये अचानक ही उनकी जो मुठभेड़ वा सम्बन्ध आपस में एक दूसरी वस्तुओं से हो जाता है उसी से वह आपस में एक

एक दूसरी का निमित्त कारण वनजाती है अजीव पदार्थोंको तो यह सब निमित्त अचानक ही मिलते हैं,वह तो इन निमित्तोंके मिलानेके लिये कोई भी कोशिश या तदवीर नहीं कर सक्ते हैं। मिट्टी यह कोशिश कर सकती है कि वह किसी वृक्ष रूप बनने के लिये उस वृक्ष के वीज को ले आवे और न वीज ही यह कोशिश कर सक्ता है कि वह मिट्टी पानी को बुला लावे यह तो जब इनकी कोशिश के विना ही किसी कारण से मिल जाते हैं तब ही वृक्ष बनने लग जाता है, परन्तु जीव अपने अनुकूल निमित्त कारणों को मिलाने की कोशिश भी करता है, बड़ी २।तदवीरें भी लड़ाता है, जीव और अजीव में यही तो भेद है, अजीव में ज्ञान और विचार नहीं है, जीव में ज्ञान हैं, यद्यपि इच्छाओं और कषायों के कारण जीव के ज्ञान में वहुत कुछ ख़रावी आई हुई है, राग और द्वेष मोह और माया का भूत इसको विल्कुल ही पागल बनाये रखता है, कषायों की भड़क इसको कुछ भी आगा पीछा नही सोचने देती है तो भी इसका ज्ञान विल्कुल ही क्षय नहीं हो जाता है, कुछ न कुछ बना ही रहता है, उस ही अपने ज्ञान के द्वारा अपनी इच्छाओं और कषायों को पूरा करने के लिये उनके अनुकूल निमित्त कारणों को मिलाने और विरुद्ध कारणों को हटाने की तदवीरें करता ही रहता है, इस प्रकार जीवों को निमित्तकारण विना उसकी कोशिश और तदवीर के भी मिलते रहते हैं और तदवीर और कोशिश से भी ।

इच्छाओं और कषायों का जो भाव जीव के अन्दर उसके कर्मों से पैदा होता रहता है वह भी निमित्त कारण के मिलने से ही जागता है, जिस प्रकार अपने निमित्त कारण अर्थात् हवा पानी और मिट्टी के मिले विना वीज में अंकुर नहीं फूटता है, वृक्ष रूप होना शुरू नहीं होता है, वीज यों ही वेकार पड़ा रहता है, इस ही

प्रकार जीवके कर्मों से पैदा हुये उसके अन्तरङ्ग भाव, उसकी इच्छाये और कषाय भी निमित्त पाने से ही जागते हैं नहीं तो वैसे ही चुप चाप पड़ी समाप्त हो जाती है, कामी पुरुष में काम भोग की कथाओं के सुनने से सुन्दर २ स्त्रियों से मिलने बात चीत करने उन के अङ्गों को देखने आदि से जितनी काम भोग की इच्छा भड़कती है उतनी वैसे ही आप ही आप नहीं भड़कती, अपने वैरी को देख कर उसकी शेखी और अकड़ की बातें सुन कर जितना क्रोध जागता है उतना वैसे नही आता है, किसी प्यारे के मरजाने पर कुछ दिनों पीछे भूल भुलैय्यां होकर उसका रंज दब जाता है, ध्यान दूसरी तरफ बट जाता है, परन्तु उसका ज़िकर करने से उसकी बातें याद दिलाने से उसके पहनने के कपड़े वा अन्य कोई उस की प्यारी वस्तु देखनेसे वह रंज फिर जाग उठता है, किसी मजेदार दिल पसन्द चीज को देख कर वा उसका जिकर सुन कर उस के खाने की इच्छा भड़कती है, मुंह में पानी भर आता है, इस ही प्रकार सब ही इच्छायें और सब ही कषायें निमित्त पाने से ही भड़कती हैं, जाहरी निमित्त मिले बिना यदि कोई हलकीसी इच्छा वा कषाय उठती भी हैं तो वह भी किसी ऐसे अदृश्य निमित्त कारण से ही उठती है जिसको हम जान नहीं सकते हैं, असल में तो प्रत्येक इच्छा और प्रत्येक कषाय निमित्त के मिलने से ही जागती हैं, जैसा कि स्त्री से भोग करने का स्वभाव तो पुरुष में जन्म दिन से ही मौजूद होता है परन्तु जब तक शरीर में वीर्य पैदा नहीं होता है तब तक तो बच्चे को यह खयाल ही नही हो सक्ता है कि स्त्री से भोग करने की भड़क क्या होती है, शरीर में वीर्य का उत्पन्न होना ही उसका निमित्त कारण है जो इस इच्छा को भड़का सक्ता है, फिर काम भोग की बातें सुनने और सुन्दर स्त्री को देखने आदि से वह और भी ज्यादा भड़क जाता है।

निमित्त कारण आप भी मिलते रहा करते है और कोशिस और तद्वीर से भी मिलाये जाते हैं, ऐसी तद्वीर हो सकने के कारण ही जितने मत और जितने धर्म इस संसार में प्रचलित हैं वह सव ही इस वात का उपदेश देते है और जोर देकर समझाते है, डराते हैं और धमकाते हैं कि अमुक प्रकार की कषाय को दवाओ. अमुक प्रकार के जोश को भडकाओ अमुक प्रकार के निमित्त मत मिलाओ, मिलें तो दूर हटाओ यदि इस प्रकार के निमित्त मिलने दोगे तो अमुक प्रकार की बुरी २ इच्छायें और खोटी २ कषायें भडक उठेंगी वडी २ बुराइयां पैदा होजायेंगी, और तुम्हारा सत्यानाश हो जायगा, इस ही तरह अमुक प्रकार के निमित्त मिलाने से अमुक २ प्रकार की इच्छाये और कषायें दव जायगी, वा भड़कने नहीं पायेंगी, इस प्रकार सारे धर्मों की वुनियाद ही इस सिद्धान्त पर हैकिनिमित्तकारण आपतो मिलतेही रहते हैं किन्तु तद्वीर और कोशिश से भी मिलाये जा सकते हैं, धर्म के इलावो नीति भी यह ही सिखाती है और अपने शुभ चिन्तक भी यह ही सलाह देते हैं कि ऐसी २ तद्वीर किया करो और ऐसे २ कामों से वचते रहा करो, ऐसी संगति में वैठो और ऐसी संगति से वचो।

इस ही सिद्धान्त पर संसारी पुरुषों का सव व्यवहार चल रहा है, धर्मात्मा और त्यागी तपस्वी भी इस ही सिद्धान्त पर चल रहे हैं और अपनी २ तद्वीर में लगे हुए रात दिन कोशिश कर रहे हैं, अगर तद्वीर करना जीव के वश में न हो तद्वीर करने से निमित्त कारण न मिलाये जा सके हों, सव ही निमित्त भाग्य सेही मिलते हों,तव तोधर्म का उपदेश शुभ चिन्तकोंकी नसीहत और दीन दुनियां की सव कोशिस विल्कुल व्यर्थ ही हो जाती है, परन्तु आश्चर्य है कि प्रत्येक धर्म तरह तरह की तदवीरें और नियम वताता हुआ भी अपनी भलाई की तद्वीर करने पर जोर देता हुआभी जव तक़दीर का कथन करता है, जव भाग्य की वड़ाई गाने पर

आता है और होनहार को दिखाता है तो दुनियां भर की प्रत्येक क्रिया को एक ही एक जीव की तक़दीर के आधीन होने हुये वताने लग जाता है, मानो दुनिया भर में जो कुछ हो रहा है वह उस एक ही जीव की तक़दीर से हो रहा है जिसके अच्छे बुरे भाग्य का वह कथन करता होता है जव उसकी किस्मत में सुवह होनी होती है तव ही दुनियांमें सुवह होती है जव शाम होनी होती है तव ही शाम होती है जव जव उसके भाग्य में पूर्वी हवा होती है तो पूर्वी चलती है औरजव पश्चमी होती है तो पश्चमी चलती है,जव उसके भाग्यमें गर्म हवा होती है तवही दुनियांमे गर्म हवा चलती है और जव उसकी किस्मत में ठंडी हवा होती है तो ठंडी चलने लगती है, गरज संसार भर की जिन २ वस्तुओं से उसका सम्वन्ध पड़ता है वह सव उस ही की तकदीर के अनुसार कामकरती हैं, अपने २ स्वभावानुसार तो मानो कोई भी वस्तु क्रिया नहीं कर रही है, चांद सूरज आदि सव ही उस एक की तकदीर के चलाये चल रहे हैं ।

अगर कुत्ता आकर कोई खाने की चीज लेगया है, या वन्दर टोपी उठा लेगया है, या खाट में खटमल होगये हैं और रात को काटते हैं मक्खी मच्छर उड़ते हैं, रात को चौकीदार वोलता है जिससे उसकी नींद में फ़रक़ पड़ता है, या चूहे खड़खड करते हैं विल्ली से भागते फिरते हैं चोर चोरी करने आते हैं, पड़ौसी सोते हैं, या जागते हैं हंसते हैं या रोते हैं खरीदार उसकी दुकान पर माल खरीदने आते हैं मित्र दोस्ती करते हैं और दुश्मन दुश्मनी करते हैं, वह सव जीव मानो यह सव काम उस एक मनुष्य की ही तकदीर से कर रहे हैं, आप तो मानो वह जीव कुछ भी नहीं कर सकते हैं और न वह सव जीव अपना कोई भाग्य ही रखते हैं, सव उस एक आदमी की ही क़िस्मत के चलाये चल रहे हैं, उस ही की तक़दीर के अनुसार नाच नाच रहे हैं ।

इस प्रकार धर्म तो जब किसी की कहानी कहने बैठता है तब तो दुनिया भर के सारे कारखाने उस ही के भाग्य के सहारे चलते हुये बताने लग जाता है मानो जीव और अजीव सब ही की सब प्रकार की क्रियायें उस ही के भाग्य का लिखा पूरा करने को होरही है, फिर जब किसी दूसरे मनुष्य का वर्णन होता है तो संसार का सब कारख़ाना उस दूसरे के भाग्य के आधीन चलता हुआ वर्णन किया जाने लगता है यहाँ तक कि चोर की जो चोरी लग गई, बहुत कुछ खड़का धड़का होते हुये भी मालिक की आंख नहीं खुली यह सब चोर के ही भाग्य से हुवा, धोखेबाज़ का जो धोखा चल गया वह उसके भाग्य नेही तो धोखा खाने वाले की बुद्धि मार दी युद्ध में जो उस राजा को जीत हुई वा अमुक अफसर को नेक-नामी मिली वह उनकी तक़दीर ने ही तो वैरी की सैना की बुद्धि खराब करके उनको ऐसे स्थान में जा फ़साया जहां वह ऐसे घिर जावें कि कही भाग कर निकल जाने को भी रास्ता न मिले, उसके भाग्य से संसार में यह उलट फेर हो गया, उसके भाग्य से ज़माना इस तरह बदल गया, ग़रज धर्म तो जब किसी की कथा कहानी कहता है तो सब उस एक ही के भाग्य से होता हुवा कहने लगता है मानो दूसरे लाखों करोड़ो जीव धारी पशु पक्षी और मनुष्य तो अपना कुछ भाग्य ही नहीं रखते हैं, एक इस ही जीव की तक़दीर के चलाये चल रहे है, यहां तक कि उनका सब जीवन मरण भी इस एक की ही तक़दीर के आधीन मान लिया जाता है।

परन्तु जब वही धर्म कोशिश तदबीर वा उपाय का कथन करता है तब उपाय से ही सब कुछ होना सिखाने लगता है, यहॉ तक कि जन्तर मन्तर और सेवा भक्ति से तो वस्तु स्वभाव के विरुद्ध अर्थात् प्रकृति के नियमों के भी खिलाफ़ हो सकता है, सारे संसार

को एक एक आदमी की एक एक उंगली पर नचा कर दिखादिया जाता है, इस ही प्रकार जब यह धर्म किसी देवी देवता वा परमेश्वर की शक्ति का कथन करते हैं तो जीवों की तकदीर और तदबीर दोनों को ही रद कर देते हैं, सब उसकी इच्छा वा शक्ति से ही होना बताने लग जाते हैं, इस प्रकार धर्म से तक़दीर तदबीर और देवताओं की शक्ति का सब कथन काव्यरस रूप ही वर्णन करते हैं, जब जिसका कथन करते हैं, तब उसकी ही बड़ाई गाने लग जाते है असलियत पर तो कुछ भी ध्यान नहीं देते हैं, इस ही कारण नय प्रमाण से किसी बात को सिद्ध नही कर सक्ते हैं, और न अपने कथनों का जोड़ ही मिला सकते है, दूसरे धर्मों की प्रत्येक बात पर एतराज़ करनेको तो तय्यार होजाते है, उनकी सब बातों के वास्ते तो हेतु मांगते है पर अपनी बातों को आंख मीच कर बिना हेतु ही मनाना चाहते हैं, जो हमारी पुस्तक में लिखा है वह ही ईश्वर वाक्य है ऐसा कहने लग जाते हैं।

सचाईसे इन सब बातों का निर्णय तो तब ही हो सकता है जब धार्मिक पक्षपात को छोड़ कर वस्तु स्वभाव पर ध्यान दिया जावे और निमित्त कारणों को भी अच्छी तरह समझ लिया जावे, तबही यह बात समझ में आसकती है कि दुनिया का यह सारा कारखाना किस तरह चल रहा है, जीवों की तकदीर क्या है, उसका क्या स्वभाव है और उसमें कितनी शक्ति है, जीवों के पिछले कर्म वा उनकी तकदीर क्या काम करती है और किस तरह करती है निमित्त किस तरह मिलते हैं, अचानक ही आ मिलते हैं वा जीवों की तक़दीर ही उन्हें खींच लाती है और वह तदबीर से भी मिला-

ये और हटाये जासकते हैं वा नही। तद्‌वीर वा उपाय क्या है और जीव कुछ तद्‌वीर कर सकता है वा नहीं कर सकता हैं तो क्या कर सकता है और क्या नहीं, ग़रज़ कवियों की लमतरानियाँ और अतिशयोक्तियों को छोड़ कर जब सब मामला विचार की जती में को खींचा जाता है तब ही सब बातो का निर्णय सचाई के साथ हो सकता है, कोई भी खटका बाकी नही रहता है।

※ समाप्तम् ※

शुद्धाशुद्ध पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२	४	वाभले	वा भले
२	६	है	हैं
४	२	अपना	अपनी
४	१७	उसको वह सदा	उसको सदा
७	१२	ड	दड
७	२७	कछ	कुछ
८	१०	उनका सव	उन सव का
८	१७	काय	कार्य
८	४	पर हते	पर ही
१४	६	असखये	असंख्याते
१४	१२	हिन्द	हिन्दू
१६	१६	अहतो	अर्हतों
१६	२२	साधुवोंक	साधुवों की
२४	१	भा	भी
२६	६	वडी	वड़ा
२७	१५	भी हमारी तरह अपनी	भी अपनी
३१	२७	कह	कहा
४३	२२	देख में	देखने में
४३	२५	इच्छा कषाय	इच्छा और कषाय
४५	१७	ले	से
४७	३	हो	ही
४६	२	उसके जो वाह्य	उसके वाह्य
४६	३	ओर	और
४६	६	को	की
५०	२१	के	कि
५५	२०	निमित्तन	निमित्त न
५५	२१	धारण करने	धारण नहीं कर सक्ती और यदि मिट्टीमें वनस्पति का रूप धारण

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
५६	१२	ठड ·	ठड
५८	२४	आने	उगने
६१	१७	हीगर्मी ·	ही, गर्मी
६२	२७	सम्वन्ध ·	सम्वन्ध
६३	१	है हमारा ...	है, हमारा
६३	१२	चील इधर उधर कव्वे	चील कव्वे इधर उधर
६३	२१	है कि:	है
६३	२४	है किसी ..	है, किसी
६४	१४	वनाता	वनाता है,
६६	१४	ता ·	तो
६७	१८	सकेगा तव	सकेगा, तव
६८	३	अन्य कर्म ·	अकर्मन्य
६८	१०	कछ ...	कुछ
[illegible]	१४	पढ़ा ..	पढ़ो
[illegible]	१५	हुनर सावने ..	हुनर सीखने
[illegible]२	१७	दूसरा ·	दूसरों
७५	१०	निमिश्र ..	निमित्त
७६	६	दुनियाभे ·	दुनियां में
७६	११	सम्वन्ध ...	सम्वंध

जैन मित्र मंडल के प्रकाशित ट्रैक्ट

उपासना तत्त्व पं० जुगलकिशोर मुख्तार मूल्य

जिनेन्द्र मत दर्पण प्रथम भाग ब्र० शीतलप्रशाद ,,

जैन धर्म प्रवेशिका प्रथम भाग वा० सूरजभान वकील

जैन धर्मही भूमंडल का सार्वजनिक धर्म सिद्धान्त
हो सक्ता है बाबू माईदयाल जैन बी०ए०

द्रव्य संग्रह पं० गौरीलाल जी मूल्य

हितैषी गायन प्रथम भाग मास्टर भूरामल ,,

,, चतुर्थ भाग ,, ,,

घोर अत्याचार और उसका फल

मुक्ति और उसका साधन

रिपोर्ट मंडल उर्दू सन् १९२६ तक उर्दू हिंदी

,, ,, सन् १९२७ ,,

,, ,, सन् १९२८ ,, हिंदी

रिपोर्ट जयन्ती, मंडल सन १९२९ हिन्दी

रिपोर्ट जयन्ती अंग्रेजी

मिलने का पता

जैन मित्र मंडल कार्यालय
बड़ा दरीबा देहली

हम और हमारे कार्य के बारे में कुछ सम्मतियां

सेन्सस रिपोर्ट, इण्डिया गवर्नमेण्ट, सन् २१

जैन मित्र मंडल दिल्ली में प्रमुख साहित्यक संस्था है।

रा० ब० जुगमन्दरलाल जज हाईकोर्ट, इन्दौर, २२जून २५

"ट्रैक्ट सब अच्छे हैं। आपमें जैन धर्म है। भला है, औरों के भले से भला होता है।

बैरिस्टर चम्पतराय जी, (लंदन से) २७-५-२६

वाक़यी जैन मित्र मंडल देहली ने बड़ा कारनुमायाँ किया जो ऐसा आलीशान जल्सा महावीर जयंती का मनाया। क्या वह दिन अनक़रीब है कि जब दुनियाँ के हर हिस्से में जहां बनी नौ ईसान मुक़ीम हों भगवान का जन्म दिन इसी तरह मनाया जायगा,

रा० ब० डाक्टर मोतीसागर, लाहौर,

जैनमित्रमंडल ने दुनियां में जैन धर्म का महत्व फैला दिया है, मैं इसमंडलके कामको मुबारिकबाद देता हूं।

बाबू अजितप्रसाद वकील, लखनऊ,— आपका मंडल जिस क़दर काम करता है काबिले तहसीन है।

बाबू सूरजभान वकील, नकुड़—"ऐसेही कामों से जैनधर्म की प्रभावना होसक्ती है, आपके उद्यम को धन्य है।

ला० दीवानचंद, मैनेजर पंजाब एंड कशमीर बैंक लि० जेहलम

ट्रैक्ट को एकबार नहीं तीन बार पढ़ा। बड़ा आनंद आया। आपके प्यारे और होनहार मंडल के सुनहरी कारनामे पढ़कर दिल बड़ा प्रसन्न हुआ।